श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 7 जुलाई 2020 मूल्य : 20 रु.

धनावंशी वैष्णवों के लिए संकीर्तन-महिमा

धनावंशी समाज के लिए कुछ विनम्र सुझाव

संकल्प का फायदा

अनुभव की बात

Shree sales पेश करते है

उत्तम आयुर्वेदिक औषधियों से निर्मित दवाईयाँ

प्रो. : श्रवणकुमार स्वामी (ढाका)

M.: 9414461615

सी-173, सिंह भूमी, राम मार्ग, खातीपुरा (जयपुर)

डिस्ट्रीब्यूटर

ऐमिल, मुलतानी, महेश्वरी, दीनदयाल, यमुना फार्मेसी स्वास्थ्यवर्धक कुडोस, डाबर, वैद्यनाथ, हिमालया, झंडू, दिविशा, चरक, राजवैद्य

•• धार्मिक साहित्य

तुलसी भजन संग्रह–मोहनलाल स्वामी, जयनारायण स्वामी • ₹160/-

नानी बाई का माहेरा–शंकरलाल स्वामी • ₹90/-

रुक्मिणी मंगल–सुशीला स्वामी • ₹100/-

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 7 जुलाई 2020 मूल्य : 20/- रुपये

वाह रे म्हारा धना धणी

धन्य धन्य रे नंदलाल कृपा जोर करी।
धनाजी नै विप्र मिलायो, शालिग्राम उसी से पायो ।
हो गये पूर्णकाम, वाह रे म्हारा धना धणी ।।
वन में जाय धनाजी भोग लगायो,
कृष्ण प्रेम से रोट खायो।
धनाजी पकड़े हाथ, वाह रे म्हारा धना धणी।।
धनाजी जाए खेत बीजण नै, साम्हा मिलिया सन्त
कहे आए जीमण नै।
बां नै जीमायो बीज, वाह रे म्हारा धना धणी।।
रामानंदजी गुरु धनाजी पायो
काशी में जा शीश निवायो।
धुआंकला गांव आयो,
मोती तालाब बणवायो, वाह रे म्हारा धना धणी।।
धनावंशं एक पंथ बणायो, कृष्ण नाम सार बतायो।
नारायण दास सरण में आयो, वाह रे म्हारा धना धणी।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-
  धनावंश के विभ्रम/04
* परिव्राजक रचित धनाजी के पद-/05
* आलेख-
  संकल्प का फायद/07
  समाजसेवी लक्ष्मीनारायण स्वामी/09
  धनावंश में परिव्राजक महंत की अवधारणा/12
  धनावंशी समाज के लिए कुछ विनम्र सुझाव/15
  भक्त प्रवर बजरंगदासजी महाराज/17
  गलता गद्दी के संस्थापक-कृष्णदास पयाहारी/18
  धनावंशी वैष्णवों के लिए संकीर्तन महीमा/20
  अनुभव की बात/23
  विचार के सोपान/25
  भक्त धनाजी और कर्माबाई/27
* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

सम्पादकीय

धनावंश के विभ्रम

हम जो कर रहे हैं--उससे बात बननेवाली नहीं है। दुनिया की पहली जाति है--जिस को अपने होने पर सतर तरह के कन्फ्यूजन हैं। ये कन्फ्यूजन ही इसके पतन का मूल कारण बनेंगे। जसनाथी और विश्नोई जाति ने धनावंशियों जैसा कन्फ्यूजन डवलप नहीं होने दिया-वे तरक्की कर रही हैं। धनावंशी की पूर्व जाति जाट नहीं थी--इस बात को नकार कर कुछ भोले धनावंशियों ने बेवजह की अंतहीन बहस छेड़ दी है। इसका कोई औचित्य नहीं था और न ही है।

ध्यान दें-

1-आज धनावंशी पूर्व जाति के नाम से सिहरता है। पर वह ब्राह्मण न था न है--फिर भी वैष्णव ब्राह्मण कहलाना चाहता है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण खोजें। ऐसा क्यों हो रहा है? उत्तर है--एक जाति विशेष के आचरण अच्छे नहीं लगना। इसलिए वह अपने पूर्वजों का नाम भी उस जाति के साथ जोड़ने से कतराता है और यह उचित है। अपनी जाति में धार्मिक सदाचरण भरने के लिए ही तो धर्म में प्रीति रखनेवाले लोगों का एक अलग पंथ बनाया था धनाजी ने । जिसे धनावंश नाम दिया गया।

2--विचार करें--धनाजी तो स्वामी बन गए थे। उन्होंने अपना पंथ ही अलग बना लिया था, पर कहीं न कहीं जाटों को उनकी भक्ति भावना अच्छी लगती है--इसलिए आज भी वे अपने समाज के महान पुरुषों में उनका नामोल्लेख करते हैं। धार्मिकता का समावेश रहता तो इस जाति में से तीन अलग पंथ बनाने की संतों को क्या जरूरत पड़ती?

3--धनावंश में महंतों और मंदिरों की आवश्यकता क्यों पड़ी? ब्राह्मणों की छह न्यातियों में कहां है महंत और इतने मंदिर। क्योंकि इस जाति को प्रयास कर धार्मिकता में बांधने की आवश्यकता नहीं थी। स्वभाव में धार्मिकता थी। जबकि धनावंशी बने परिवार में धार्मिक भाव भरने के लिए मंदिर--महंत--कई दूजे आचरणों से इस जाति को बांधा गया। विगत सौ वर्ष से इस जाति में धार्मिक शैथिल्य आने लगा है और परिणाम हमारे सामने है।

4--सारे धनावंशी एक ही जाति के हैं--किंतु इन में से कुछ ब्राह्मण क्यों कहलाना चाहते हैं-उन्हें किसी के आचरण पसंद नहीं हैं? पर नहीं पसंद है, तो स्वयं को श्रेष्ठ धनावंशी साबित करो।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

समाज की चिंता करों

प्रिय धनावंशी बंधुओं
जरा गौर करें।

धनावंशी समाज के प्यारे भाइयों ।

आप में से कुछ भाई अवश्य ही गीता पाठी होंगे? गीता के एक श्लोक की अर्धाली है-संशयात्मा विनस्यति संशय यानि भ्रम बड़ी बुरी चीज है । समाज तो क्या आत्मा तक का विनाश कर देता है। आपने देखा--भ्रम ने धनावंश समाज का कितना बड़ा नुकसान कर दिया। सब होचपोच हो गए। जिसके जो जी में आया वैसी बातें करने लगा। कोई धनुरवंश-कोई धनेष्ठा वंशी--एक तथाकथित पढे लिखे ने कहा धन्यवंश--कोई धनु ऋषि कहने लगे। गोपालपुरा के विद्वान महंत ने तो सार्वजनिक रूप से स्वामियों की ढाणी में यह तक कह दिया कि हम धनेष्ठा ऋषि की औलाद हैं। धनेष्ठा बालेरां गांव का था। उटपटांग बातों से समाज का नुक्सान होता ही जा रहा है। एक संत--जिसने धनावंशी स्वामी बनाकर इस समाज पर बड़ा भारी उपकार किया। उन्हें जानबूझकर भूलने के लिए न जाने क्या क्या पापड़ बेलने पड़े और कुछ अभी भी बेल रहे हैं । ऐसा क्यों हो रहा है? जब किसी समाज के किसी व्यक्ति के पास धन-द्रव्य की आमद होती है तो वह अपने समाज के उत्थान के लिए दो पैसे खर्च करने की सोचता है। हमारे लोगों ने पूरी ऊर्जा अपने आपको ब्राह्मण बनाने में खर्च करदी। विगत तीन वर्षों से धनावंशी समाज धनाजी वर्सेज वैष्णव ब्राह्मण का खेल खेलने में अपनी ऊर्जा खर्च करने में लगा है। समाज के बाकी कामों की सुध कौन ले? सही बात समझते सब हैं। जो धनेष्ठा आदि की बातें करता है--असलियत उसे भी पता है। पर गुमराह करके राजनीति करने के नुस्खे को छोड़े कौन? समाज की चिंता करो भाइयों। थोड़ा आगे बढो। जो पढा लिखा है। जो थोड़ी बहुत बुद्धि रखता है और जो भला मनुष्य है, वह तो सारी बात जान चुका। जो जिद्द रखता है-उसका कोई इलाज नहीं हुआ करता। दूसरे वांछित कामों की फिक्र करें।

शृंगार जब शब्दों में हो तो आभूषणों की आवश्यकता नहीं होती।

परिव्राजक रचित धनाजी के पद

दोहा –

1 प्रभुता वाचक शब्द सब स्वामी सम ना कोय ।
भक्त कृपा बल पायके धनावंशं नित जोय ।।
2 एक पत्नी परिवार का एक स्वामी है देश ।
एक समाज एक सृष्टि का स्वामी मान विशेष ।।
3 स्वामी वैष्णव हरिभगत वैरागी अरु साध ।
शब्द अर्थ शरणागति हरि से प्रीति अगाध ।।
4 हरि की भक्ति अमोल निधि पाई धनावंश ।
धना भक्त गुरू देव में जरा न कीजे संश ।।

पद

ऐसो भक्त भयो है महान रे, सांवरियो ज्यारै हाजर खड्यो ।
हाजर खड्यो रे ज्यारै त्यार खड्यो ज्यारै हाजर खड्यो ।।

अन्तरा

1 एक समै एक गांव में भाई, आया वैरागी संत।
आय जाट घर वासो लीन्हो, नाम जपै भगवंत ।।सांवरियो ज्यारै...
2 गृहस्थी कै एक छोटो बालक, जिणरो धनो नांव ।
मात पिता रो घणों लाडलो, शील स्वभाव गुणवान ।।सांवरियो ज्यारै...
3 संतां पूजा करी प्रेम से, लियो हरि को नाम ।
धनो हठ चट पड़ गयो जी, मैं तो लेऊंलो सालगराम ।।सांवरियो ज्यारै...
4 दूजो नकली पत्थर दीन्हो, बाळक लियो भुळाय ।
पूजा पाठ बताया सारा, जीमो थे ठाकुरजी नै जिमाय ।।सांवरियो ज्यारै...
5 न्हाय धोय धनै पूजा कीन्ही, भोजन लियो बणाय ।
अर्पण करके बैठ्यो सांम्है, जीमो थे ठाकुरजी बेगा आय ।।सांवरियो ज्यारै...
6 दोय च्यार दिन बीत्या प्रभुजी, मनमें करयो विचार ।
भोळो बाळक हठ नहीं छोडै, पक्का तो पड्या है संस्कार ।।सांवरियो ज्यारै...
7 आय प्रभुजी दर्शन दीन्हा, रूप चतुर्भुज धार ।
प्रेमा भगती जागी हिरदै, प्रगट ज्ञान उजियार ।।सांवरियो ज्यारै...
एक भक्त भयो निस्काम, सांवरियो ज्यारै हाजर खड्यो।।

सफलता और असफलता तो शब्द मात्र है, असली मजा तो काम करने में आता है।

तर्ज-धरती धोरां री

निश दिन गुण गोविन्द का गावे, ऐसो हरि को भक्त कहावे,खेती बावै काम चलावै साथी सांवरियो...साथी

1 धना बिरखा खेत में भारी, हळ बावण की करलै त्यारी,आज्ञा दीन्ही पिता महतारी।साथी सांवरियो...साथी...
जल्दी पूजा पाठ निभाया,लेकर चरणोदक हर्षाया,मात पिता को शीश नवाया।साथी सांवरियो...साथी...

2 धनै हळियो खांधै लीन्हो,दो बळधांरो जोडो कीन्हो,बीजोल्यै बीज घाल ले लीन्हो। साथी सांवरियो...साथी...
धनो बहंतो सुगन मनावै,दोघड़ पणिहारयां भर ल्यावै,सांम्ही सोन चिडी मिल ज्यावै।साथी सांवरियो....साथी...

3 धनो भजन गांवतो जावै,सांम्ही संत मण्डली आवै,कुण म्हानै धन्नाळो गांव बतावै।साथी सांवरियो....साथी...
भोजन धनै हाथ को पावां,जद म्हे गुरू नै मुख दिखलावां,निश दिन भगवत रा गुण गावां।साथी सांवरियो....साथी...

4 धनो सोच करै मन माहीं,घर पर भोजन मिलणों नाहीं,प्रभुजी खेल रचायो काईं।साथी सांवरियो....साथी...
संत सब भूखा पड्या तडफावै,जिमायां बिना धर्म घट ज्यावै,काया देख घणी कळपावै।साथी सांवरियो....साथी...

5 धनै प्रभु का ध्यान लगाया, प्रभुजी हाजर बीज बताया ,लेकर संतां हाथ झलाया।साथी सांवरियो....साथी...
जो नर भजन भक्त का गावे,सुणकर गरीब दास हरसावे,घट में चेतन ज्योति जगावे।।साथी सांवरियो....साथी...

वैष्णव समाज जामें श्रेष्ठता की कमी नाहीं, भूल वश पात्र परिहास को कहायो है ।
ब्राह्मणवाद, क्षत्रीवाद, ऋषिवाद लोभ छायो, वर्णशंकरता को दोष आप ही अपनायो है ।
गुरू उपकार हार कृतघ्नी बन्यो है पूरो, नफ़रत अभिमान अन्धकार छायो है ।
चेतन चिराग बन आयके समाज माहिं, असली स्वरूप धन्नावंस को दिखायो है ।

धार्मिक समाज माहिं स्याणा स्याणा लोग जुड्या मिलके सकल साचो मतो ही उपायो है ।
संग्रहालय शोध शोध शोधके प्रमाण सेंठा मर्दुमशुमारी आदि ग्रंथ बतलायो है ।
धन्नावंसी संहिता रु धन्नावंसी अंक छाप धन्नावंसी इतिहास पूरो समझायो है ।
श्रद्धावान भक्तीवान आस्तिक नीतिवान धन्नावंसी गुरू श्री धन्नों जी ही पायो है ।

बहुत सा चिराग धन्नावंस में प्रकाश हीन चुप चाप गति बिना अंधकार छायो है ।
मानव चिराग गति विधि से प्रकाश करे पाखण्ड तूफान आगे ठहर नहीं पायो है ।
वाणी और लखनी की हल चल शुरू होई सारा ही चिराग अपनो अस्तित्व सम्हायो है ।
चेतन चिराग बन ज्योति से जलाई ज्योति सारो ही समाज ज्योति मय दरषायो है ।

हजारों किलोमीटर की यात्रा पहले कदम से ही शुरु होती है।

संकल्प का फायदा

अनेक प्रकार के विचार एक साथ आना शक्ति का विनाश करना है। इसे यह स्पष्ट है कि मनुष्य की कार्यक्षमता इस बात पर निर्भर है कि वह कहाँ तक अपने विचारों पर नियन्त्रण रख सकता है।

मानसिक शक्ति का प्रकाशन लक्ष्य की एकता पर निर्भर करता है। जब कोई मनुष्य किसी कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, तब उसका उत्साह बहुत ही बढ़ जाता है। इस उत्साह–वृद्धि के फलस्वरुप वह अनेक प्रकार के संकल्प करने लगता है। प्रत्येक संकल्प के करने से उसकी मानसिक शक्ति खर्च होती है। कितने ही संकल्प हमारे मन में ऐसे आते हैं जो कि एक दूसरे के विषम होते हैं। मनुष्य सभी कामों में अपने आप को नहीं लगा सकता। वह कभी एक बात सोचता है तो कभी दूसरी। जो व्यक्ति अपने अनेक संकल्पों को बार–बार ग्रहण करने और छोड़ने में लगा रहता

है, वह कभी भी सफल नहीं होता। मनुष्य की कार्यक्षमता उसके चेतन मन के विचारों पर निर्भर नहीं करती। चेतन मन के विचार किसी भी मानसिक क्रिया प्रारम्भ करते है। काम करने में सफलता प्राप्त करना अचेतन मन की उस काम में लगन पर निर्भर है। अचेतन मन एक काम को ही एक समय में कर सकता है। यह अनेक काम एक साथ नहीं कर सकता। मनुष्य कई बातों को एक ही साथ सोचता है तो वह किसी भी कार्य में सफल नहीं होता। जब उसके चेतन मन के विचार एक बात सोचते रहते हैं, तब उसका अचेतन मन दूसरे काम को सफल बनाने में लगा रहता है। जब दो कार्यों को बराबर महत्त्व दिया जाता है, तब दोनों के विचार अचेतन मन में चलने लगते हैं। ऐसी अवस्था में एक मानसिक क्रिया दूसरी मानसिक क्रिया में बाधक होती है। दो मानसिक क्रियाओं की आपस में मुठभेड़ हो जाने पर मनुष्य किसी भी कार्य को करने में सफल नहीं हो पाता।

कार्य में सफलता तभी प्राप्त हो सकती है, जब हम अपने अचेतन मन को एक ही कार्य करने का आदेश दें। अनेक प्रकार के विचार एक साथ आना शक्ति का विनाश करना है। इसे यह स्पष्ट है कि मनुष्य की कार्यक्षमता इस बात पर निर्भर है कि वह कहाँ तक अपने विचारों पर नियन्त्रण रख सकता है। जब कभी अनेक प्रकार के संकल्प हमारे मन में उठने लगें तो हमें समझना चाहिए कि हम किसी भी काम को करने में सफल नहीं होंगे। प्रत्येक संकल्प के साथ अनेक प्रकार की विचारधाराएं प्रवर्तित होती है। इनमें सब शक्ति नष्ट

आपने अब तक अपनी जिंदगी के अनुभव से क्या क्या सीखा?

हो जाती है। इन धाराओं को रोक सकने पर ही कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है।

जब मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के संकल्प उठने लगते हैं, तब वह अपने मन को किसी भी कार्य में देर तक नहीं लगा सकता, वह देर तक एक काम करता है, फिर उसका मन दूसरा काम सोचने लगता है। इस प्रकार उसकी कार्य करने की योग्यता भी नष्ट हो जाती है। इस योग्यता के नष्ट हो जाने पर उसका आत्मविश्वास चला जाता है। उसे भारी मानसिक थकावट होने लगती है। किसी भी काम को वह अब प्रसन्नता से नहीं करता। उसके सभी काम अब उसे भाररूप हो जाते है। प्रत्येक काम को चिन्ता के साथ करना अपनी मानसिक शक्ति का ह्रास करना है।

काम करने से मनुष्य की मानसिक शक्ति नष्ट होती है और उससे मानसिक शक्ति की वृद्धि भी होती है। जिस काम को भार समझकर किया जाता है वह हमारी मानसिक शक्ति को नष्ट करता है और जिस काम को प्रसन्नता के साथ किया जाता है उससे मानसिक शक्ति की वृद्धि होती है। जब हम बहुत से काम अपने सामने रख लेते हैं, तब हम प्रत्येक काम को उतावलेपन से करते है। ऐसी अवस्था में काम करना भार को उतारना मात्र हो जाता है। इस प्रकार के काम करने से शक्ति की वृद्धि नहीं होती वरन् ह्रास ही होता है। किसी भी काम को जल्दी-जल्दी करने से थकावट शीघ्रता से आती है। जो व्यक्ति सदा अनेक कामों में लगे रहते है वे किसी काम को भली प्रकार से नहीं कर पाते।

प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी सफलता चाहता है अथवा जो अपनी मानसिक शक्ति का अपव्यय नहीं करना चाहता, उसे अपने सामने आने वाले कामों में से किसी एक का चुनाव कर लेना चाहिए। जब तक अनेक प्रकार के संकल्पों में किसी एक को मनुष्य नहीं चुन लेता, वह जीवन में सफलता नहीं पाता। जीवन में सफलता किसी भी काम को लगने से करने से प्राप्त होती है। अब प्रश्न यह है कि हम अपने आप को किस काम में लगाये? कितने ही व्यक्ति दिनों तक विचार करने के बाद भी यह निर्णय नहीं कर पाते कि वे किस काम को प्रारम्भ करें। वास्तव में यदि कोई मनुष्य किसी काम को हाथ में लेने से पूर्व सभी बातों कर विचार करे तो वह पाग हो जायेगा। विक्षिप्तता की अवस्था में ही मनुष्य किसी भी समस्या के प्रत्येक पहलू पर विचार करता है। वह किसी निर्णय को बार-बार बदल देता है। इससे उसे किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती। वह अपनी सामर्थ्यवान खो देता है। जब हमारे समक्ष अनेक कार्य आ जाये, तब हमें पहले यह निर्णय कर लेना चाहिए कि सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य कौन-सा है? पहला काम पहले करना इस सिद्धान्त को मानकर चलने से ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है। जो काम हमारे हाथ में है, वही सबसे महत्त्व का कार्य है। हाथ का काम छोड़कर दूसरा काम लेना एक प्रकार का पागलपन है। इस तरह काम करने से अनेक प्रकार के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व पैदा होते है। एक कवि ने लिखा है कि जब वह कविता लिख रहा था, तब अनेक कविताएं उसके मन में आई। वे इतनी अधिक हो गई कि उसे यह भय हो गया कि जो हाथ में काम है वही विनष्ट न हो जाये। अतएव उसने अपने सभी संकल्पों को निर्दयतापूर्वक कुचल डाला। ऐसा करने ही वह कविता को लिख सकने में समर्थ हुआ। जीवन को सफलता संकल्पों के विनाश करने पर उतनी ही निर्भर करती है जितनी उनके दृढ़ रहने पर।

***

न केवल भारत बल्कि संसार का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं होगा,जो गुरु की महत्ता नहीं जानता। भारत की हर जाति हर पंथ के लोग अपने गुरु महाराज पर गहन श्रद्धा रखते हैं।

हम धनावंशियों को क्या हो गया है? हम अपने गुरु के प्रति कोई श्रद्धा नहीं रखते। संसार की विचित्र जाति और विचित्र लोग। यह गुरु विहीन क्यों रहना चाहती है?

जो लोग धनाजी महाराज के अनुयायी बने-उस काल में जरूर भले लोग रहे होंगे? उन्हीं के वंशज अब यहां तक आते ऐसे गुरु हीन कैसे हो गए? किसी अज्ञानी को इतने बड़े भगवद् भक्त धनाजी महाराज का विरोध करते देखता हूं तो मन में आती है यह कैसा व्यक्ति है जो इतना संस्कार हीन हो गया, अपने ही जातीय गुरु का विरोध कर अपनी ही जाति को गाली देने जैसा कार्य कर रहा है। यह धनावंश में क्यों पैदा हुआ?

जो व्यक्ति हर काम में आगे रहते हैं वो इसलिए नहीं कि वे मूख होते हैं,
बल्कि इसलिए कि उन्हें अपनी जिम्मेदारी का अहसास होता है।

व्यक्तित्व विशेष

समाजसेवी और समाजरत्न

श्री लक्ष्मीनारायण स्वामी : एक परिचय

जयनारायण स्वामी
उपनिदेशक (कृषि)

श्री लक्ष्मीनारायणजी का व्यक्तिगत जीवन बहुत ही ऊर्जावान था। इनको स्पष्ट मृदुभाषी, मिलनसार एवं शैक्षणिक जागृति के लिए सदा जाना जाता रहेगा।

परम आदरणीय श्री लक्ष्मीनारायण स्वामी का जन्म विक्रम सम्वत् 2000 दिनांक 28 मार्च 1943 के दिन कुलीन धनावंशी पितृश्री रामचन्द्रजी एवं माताश्री मोहनीदेवी के घर हुआ। पितृश्री रामचन्द्रजी ग्राम रूपाथल तहसील जायल जिला नागौर के निवासी हैं एवं सात्विक, कठोर अनुशासन एवं उच्च विचारों वाले कृषक परिवार से हैं। तीन वर्ष की शिशु अवस्था में ही इनकी माताजी का देहान्त हो गया था बचपन में लालन-पालन इनकी दादीजी के द्वारा ही किया गया।

प्राथमिक शिक्षा से सैकण्डरी तक नजदीक कस्बे कुचेरा (नागौर) में हुई थी, इण्टरमीडियट से बी.कॉम तक शिक्षा बांगड कॉलेज, डीडवाना (नागौर) में हुई। तत्पश्चात् उच्च अध्ययन के लिए जोधपुर आए। जोधपुर विश्वविद्यालय (वर्तमान जे.एन.वी.यू. विश्वविद्यालय) जोधुपर से एल.एल.बी. की उपाधि से सन् 1966 में विभूषित हुए। सन् 1967 में इनका पुलिस अभियोजन निरीक्षक के पद पर चयन हुआ। जोधुपर, बालोतरा एवं नागौर मुख्यालय पर पदस्थापन रहा, फिर पुलिस उपनिरीक्षक की सेवाओं में चयन हुआ तथा लूणी, पाली में पदस्थापन रहा। फिर पदोन्नत होकर पुलिस वृत्त निरीक्षक बने तथा पुलिस थाना पाली, सरदारपुरा, महामन्दिर, उदय मन्दिर, शास्त्री नगर इत्यादि में पदस्थापन रहा। सन् 1992 में पदोन्नत होकर पुलिस उपअधीक्षक बने और फलौदी, जोधपुर पूर्व, औसियां, जोधपुर ग्रामीण, बिजली बीकानेर, रायसिंह नगर, सार्दुलपुर राजगढ़ (चूरू) इत्यादि स्थानों में पदस्थापित रहे। मार्च 2001 में सेवानिवृत्त हुए। फिर राजस्थान उच्च न्यायालय जोधुपर में अधिवक्ता के रूप में अपनी प्रेक्टिस प्रारम्भ कर दी।

श्री लक्ष्मीनारायणजी का व्यक्तिगत बहुत ही ऊर्जावान थे। इनको स्पष्ट मृदुभाषी, मिलनसार एवं शैक्षणिक जागृति के लिए सदा जाता रहेगा। क्योंकि सदैव धनावंशी समाज, जो कि अधिकांश गांवों में रहता है उनके विद्यार्थियों के लिए छात्रावास आवश्यक है एवं संगठन की संजीवता से जोधपुर, जयपुर, नागौर, बीकानेर एवं मंगलपुरा (लाडनूं) स्थानों पर वर्तमान में छात्रावास स्थापित है। इनमें लक्ष्मीनारायणजी का नेतृत्व, संरक्षत्व का अविस्मरणीय योगदान सदा किया जाएगा।

समाज के प्रबुद्धजनों के साथ आपने अपने संरक्षण में श्री धनावंशी स्वामी समाज के गठन के लिए वर्ष 1973-74 से प्रयास किए। संस्था का पंजीयन क्रमांक 169 सन् 1976-77 है। संस्थापक अध्यक्ष महन्त श्री बद्रीदास गोलिया थे। इस संस्था की वजह से मंगलपुर (लाडनूं) में

पापा हमारी सोच से होता है, शरीर से नहीं और
तीर्थों का जल हमारे शरीर को साफ करता है, सोच को नहीं।

समाज भवन जिस पर स्थानीय असामाजिक तत्त्वों ने कब्जा किया था, व्यक्तिगत प्रयास कर माननीय न्यायालय डीडवाना से पैरवी कर समाज के पक्ष में फैसला करवाया एवं पुन: भवन समाज के कब्जे में लिया।

जयपुर पदस्थापन के दौरान सप्ताह में कम से कम एक दिन नियमित रूप से समाज बंधुओं से सम्पर्क करते थे, जिसके फलस्वरूप वहां कार्यकारिणी संस्था के गठन हेतु सार्थक प्रयास किए एवं तत्समय समाज बंधुओं से आग्रह करते रहे कि वैष्णव, श्री वैष्णव, श्री वैष्णव शब्दों के बजाए समाज परिचय के लिए धनावंशी शब्द का प्रभुत्व रहना चाहिए। आपके ही अथक परिश्रम के फलस्वरुप जयपुर में समाज का शानदार भवन बना।

बीकानेर में पदस्थापन के दौरान श्री घड़सीरामजी पुलिस निरीक्षक के साथ बराबर चिन्तन-मनन कर वैष्णव धनावंशी समाज समिति, बीकानेर का गठन हुआ। जिसकी प्रेरणा से दिनांक 31 अगस्त 1997 के दिन समाज बंधुओं भव्य छात्रावास का निर्माण हुआ। परिणामस्वरुप सैकड़ों छात्रों को रोजगार प्राप्ति के अवसर प्राप्त हुए।

नागौर जिले में धनावंशी स्वामियों की आबादी काफी है। मार्च 1997 में इनके बड़े भ्राता श्री नरेन्द्रकुमार के संरक्षण में अध्यक्ष श्री देवाराम स्वामी द्वारा श्री धनावंशी स्वामी समाज समिति नागौर का पंजीयन क्रमांक 1/94-95 करवाया। नागौर मुख्यालय पर नि:शुल्क भूमि आवण्टन के लिए आवश्यक दस्तावेज एवं सहयोग समिति को प्रस्तुत किये। वर्तमान में छात्रावास भवन में लगभग 20 कमरे हॉल मय सुविधाओं के संचालित है। अध्ययन पश्चात् सैकड़ों विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए।

जैसा कि विदित है 90 के दशक में जोधपुर में भी श्री धनावंशी स्वामी शिक्षण/छात्रावास संस्थान, जोधपुर का पंजीयन क्रमांक 39/1995-96 है, जिसके संयोजक लक्ष्मीनारायण जी एवं अध्यक्ष डॉ. के.डी. स्वामी थे।

वर्तमान में भी अध्यक्ष का कार्यभार इन्हीं के पास था। इनकी भविष्य की योजना थी कि बालिकाओं की उच्च शिक्षा हेतु बालिका छात्रावास की महत्ती आवश्यकता है। छात्रावास की सुविधा से समाज के सैकड़ों युवकों को राजकीय एवं निजी क्षेत्र में रोजगार प्राप्ति में सहायता मिली।

आपने स्वामी, साद, बैरागी, समाज को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल कराने हेतु महन्द बद्रीदासजी गोलिया के साथ विशेष प्रयास किया।

समाज बंधुओं से आग्रह है कि मनुष्य जीवन बहुत मूल्यवान है एवं बार-बार नहीं मिलता इसलिए इसको व्यक्तित्व-उन्नयन, सामाजिक संगठन, शैक्षणिक योग्यता, समाजसेवा, मानवसेवा, सत्संग, भजन-ध्यान, चरित्र निर्माण आदि कार्यों में लगाना चाहिए। इन्होंने अपना जीवन इन्हीं में लगाया है-जैसे मृत्यु पूर्व घोषण पत्र में इन्होंने अपना देहदान एम्स हॉस्पिटल, जोधुपर में देने का उल्लेख किया। इनके सुपुत्र ओमप्रकाशजी ने इनकी इच्छा की पालना करते हुए एम्स हॉस्पिटल को इनकी देहदान कर दी। घोषणा-पत्र में ओढ़ावणी, पेरावणी नहीं लेने का उल्लेख भी किया, जिसका इनके परिवार जनों शोक-सन्देश में ही उल्लेख कर दिया। अत: परिवारजन में बड़े भ्राता श्री नरेन्द्रकुमार, पुत्र ओमप्रकाश, पौत्र नितेश व अन्य सभी परिवारजन साधुवाद के पात्र है।

परिवारजनों द्वारा सदैव इनकी प्रेरणा से शिक्षा के प्रति विशेष सम्मान रखा जाता रहा है। नागौर छात्रावास में कमरा निर्माण करवाया, पैतृक गांव रुपाथल राजकीय विद्यालय में हॉल निर्माण कर स्कूल को भेंट किया। अभी और स्कूल हेतु प्याऊ का निर्माण कर भेंट करना प्रस्तावित है।

भक्त शिरोमणि धनाजी के प्रति इनकी श्रद्धा सदैव रही है, जिसके लिए महन्त बद्रीदासजी द्वारा संकलित पुस्तक भक्त शिरोमणि श्री धना के प्रकाशन में सहयोग एवं समन्वय किया है। संशोधित संस्करण श्री मठ काशी में भी आवश्यक सहयोग किया। काशी के रामानन्दाचार्य श्री रामनरेशचार्य के साथ भी आपका प्रगाढ़ समन्वय रहा। श्री आचार्य चरण का भी आप पर पूरा आशीर्वाद रहा।

मार्च 2001 सेवानिवृत्ति से पूर्व इन्होंने अपना शिक्षण संस्थान स्थापित किया। दो दशक से अधिक समय से शिक्षण संस्थान एवं छात्रावास का संचालन आप द्वारा किया जाता रहा है। शिक्षा ही सर्वोपरि है यह आपके जीवन का मुख्य प्रयोजन था।

राजकीय सेवा के बारे में इन्होंने बताया कि मुझे सदा ही श्री सत्यनारायण सोनी से.नि. अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, श्री सुनील अरोड़ा, से.नि. आईएस, श्री प्रमोद वर्मा से.नि. उपनिदेशक अभियोजन, श्री मदनगोपाल गौड़ से. नि. कार्यालय अधीक्षक, श्री हरिसिंह से.नि. अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक का सहयोग रहा। लगभग तीन महीने एम्स अस्पताल में जोधपुर में ईलाज के दौरान भी श्री हरिसिंहजी, सोनीजी एवं वर्माजी का विशेष सहयोग रहा। जिसके लिए परिवारजनों द्वारा इन सभी का आभार एवं साधुवाद!

जीवन की किताबों पर बेशक नया कवर चढ़ाइये, पर बिखरे पन्नों को पहले प्यार से चिपकाइये।

श्री लक्ष्मीनारायणजी द्वारा आध्यात्मिकता के प्रति भी सदैव रुचि रही है। परिश्रम स्वरुप डॉ. पूर्णदास से.नि. प्रोफेसर, हिन्दी के सानिध्य में भजन संग्रह, नानीबाई का मायरा एवं रुकमणि मंगल के प्रकाशन की प्रेरणा एवं इनकी पुत्री एवं उनके परिवारजनों द्वारा प्रकाशन कार्य किया गया, जिसकी वे सदैव प्रशंसा करते थे।

आपने सामाजिक कार्य को लेकर बड़े भ्राता श्री नरेन्द्रकुमार जाखेड़ा, आदूरामजी सारण गाजू, महन्त बद्रीदास गोलिया जोधपुर, डॉ. के.डी. स्वामी, श्री देवादास सारण गाजु, श्री देवारामजी बाकलिया, महन्त परसरामजी आसोप, मांगीलालजी भंवरिया पून्दलू, भागूलालजी, सोहनदासजी खदाव जोधपुर, प्रेमदास गोलिया जोधपुर, चेतनजी स्वामी डूंगरगढ़, भगवानदासजी बीकानेर, रामनिवासजी जयपुर, राधेश्यामजी स्वामी राजगढ़, रूपदासजी स्वामी सुजागढ़, जुगलाल मेहला बीकानेर, राधेश्यामजी गोदारा रायधनु, गंगादास पूनिया पाल, चतुर्भुज वैष्णव, जोधपुर के सहयोग की प्रशंसा की ओर सैदव इन सब का आभार जताते थे। ऐसे दिव्य एवं परोपकार व्यक्तित्व को शत-शत नमन।

लक्ष्मी की आराधना, धरि नारायण ध्यान।
देह-दान करि राम-सुत। पायो पद निर्बान।।

नोट : परिवारजनों एवं समाज बंधुओं से चर्चा अनुसार है एवं इसका लेखनबद्ध जयनारायण स्वामी उपनिदेशक (कृषि) द्वारा किया गया।

●●●

जाति की महत्ता

बहुत से लोग अज्ञानतावश यह कहते सुने जाते हैं कि जाति वाति कुछ नहीं होती। अध्ययन-चिंतन न होने की वजह से वे ऐसा कहते हैं। गीता पढनेवाले भाई बहन जानते हैं- उसमें कहा गया है- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं-गुण कर्म विभागशः परमात्मा को माननेवाला फिर जातियों को फालतू कैसे कह सकता है? पाश्चात्य प्रभाववश कोई आदमी जाति पर टिप्पणी करता है। हर जाति अपनी जगह श्रेष्ठ और उत्तम होती है। हर जाति के अपने रीति रिवाज और अपनी परम्पराएं होती हैं। जो व्यक्ति अपनी आत्म उन्नति के लिए जो जो प्रयास करता है-वे कालान्तर में उस जाति को सम्मान दिलाते हैं। जातियों में परस्पर सहिष्णुता के भाव आवश्यक है। अपनी स्वयं की जाति से कभी भी द्वेष या घृणा नहीं करनी चाहिए। जाति आपकी पहचान है। आप जैसे हैं-आपकी जाति वैसी है। आप ही की पहचान आपकी जाति की पहचान है। हर व्यक्ति का यह ध्येय होना चाहिए कि मैं अपने कृत्यों से अपनी जाति को सम्मान दिलवाऊंगा। जो व्यक्ति अपनी जाति से निरपेक्ष और असंग हो जाता है- उसे अकृतज्ञ श्रेणी में रखा जा सकता है। अपनी जाति के साथ छल करना पाप बोधक है।

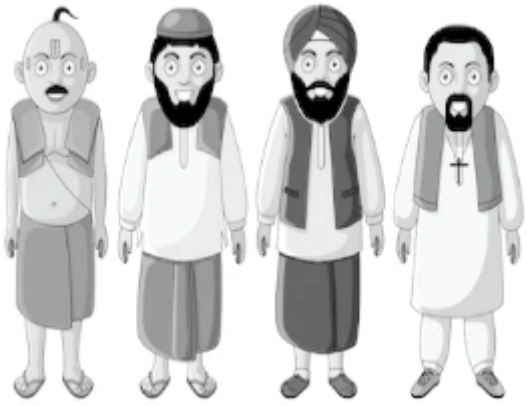

आपका जिस जाति में जन्म हुआ है यह ईश्वरीय विधान है। बहुत सोच समझ कर परमात्मा ने आपको उस जाति में भेजा है। अब अपनी जाति से प्रेम करते हुए उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना आपका कर्तव्य है। आपके वैशिष्ट्य से सबसे पहले आपकी जाति गौरवान्वित होगी-फिर गांव देश समाज।

जिन्दगी की खूबसूरती रिश्तों में है, इन्हें हमेशा बनाये रखें।

आलेख

धनावंश में परिव्राजक महंत की अवधारणा

किसी भी समाज में जब पूर्व प्रचलित धार्मिक एवं आध्यात्मिक परम्पराएं अवसाद को प्राप्त होने लगे तो निश्चित तौर पर यह जानना चाहिए कि जीवन की चिरन्तन्ता पर विचार करने वाले बौद्धिकजन का अभाव हुआ है। उस समाज के लोगों को इस अप्रिय स्थिति पर चिंतन-मनन करना चाहिए। अग्रगण्य एवं बौद्धिकजन के अभाव से उस समाज के आदर्शवादी मूल्य क्षीण होकर मर जाते हैं। किसी भी समाज की सुन्दर छवि उसके नैतिक, आध्यात्मिक और सौन्दर्यपरक प्रतिमानों से बनती है।

● चेतन स्वामी

भक्तिकाल में अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ। इसी दौरान भक्त धनाजी के प्रयासों से धनावंश अस्तित्व में आया। किसी भी सम्प्रदाय अभ्युदय काल पूर्णतया आदर्शवादी होता है। वैराग्य, भगवद् भावना ईश आराधना की भावना से प्रेरित इस समुदाय के सैकड़ों मंदिर निर्मित हुए। समाज को धर्म की चिंतनधारा से जोड़े रखने के लिए 35 के लगभग महंतद्वारे भी बने। महंत उसी को बनाया गया, जो सामान्यजन से आध्यात्मिकता के लिहाज से काफी उच्चतर स्थिति में था। उसकी जीवन दृष्टि भौतिक से परे आध्यात्मिक मूल्यों से संवलित थी। धर्म की विचारधारा को संपोषित करने तथा उनके संप्रसार के लिए कटिबद्ध थी। वहीं महंत नाम का वह व्यक्ति सदाचारों के निर्वहन में एक आदर्श स्थिति को धारित करनेवाला था। पंथ प्रवर्तक ने जिस धार्मिक राह का संचालन किया है, उसका भली प्रकार अनुसरण करनेवाला हो, वह भी महंत के लिए एक आवश्यक कर्म था। वैसे तो कोई भी मनुष्य नैतिक रूप से स्वतंत्र होता है, वह चाहे तो पूर्व परम्पराओं का अनुसरण करे, वह चाहे तो उन परम्पराओं में किसी नव्य राह का सूत्रपात करें और वह चाहे तो सब प्रकार के शैथिल्य का शिकार हो जाए। पर इन तीनों स्थितियों में एक पंथ के लिए आदर्श स्थिति कौनसी है-इस पर विचार किया जाना आवश्यक है।

पंथ की दृष्टि से घातक स्थिति शैथिल्य को प्राप्त हो जाना, ऐसा करके तो वह स्वयं एक पतनकारी स्थिति में पहुंच गया और उसने अपने पंथ की आध्यात्मिक उन्नति को भारी आघात पहुंचाया।

एक महंत-किसी मठाधीश सत्ता का नाम नहीं है। न ही वह किसी अकर्मण्यता का प्रतीक है। वह तो सृजनशील मनीषा का वाहक है। उसका पद दोहरे प्रतिमानों पर टिका हुआ है, एक ओर वह स्वयं का आत्मिक उद्धार प्रतिमानों पर टिका हुआ है, एक ओर वह स्वयं का आत्मिक उद्धार करता है, दूसरी ओर अपने पांथिक स्वजनों के आध्यात्मिक उद्धार के लिए प्रतिबद्ध है। काल और समय के प्रवाह में उसे अपनी भूमिका का निर्वहन सम्यक प्रकारेण करना है, यह सीख उसके भीतर से उपजनी चाहिए।

सम्प्रदाय चाहे कोई सा हो, जब तक उसकी आत्मिक संरचना को नहीं जाना जाएगा-महंत के लिए कोई करणीय कार्य ही नहीं रह जाएगा। इतिहास में जाएं, जब श्री सम्प्रदाय एकांगी और केवल पद पूजन तक सीमित हो गया तो रामानन्दजी को यह स्थिति जड़वत, निष्क्रिय और अप्रिय लगी, उन्होंने इसका प्रतिकार अपने गुरु राघवाचार्यजी के समक्ष रखा। कुछ वाद-विवाद-संवाद के बाद रामानंद को नवपंथ रामावत सम्प्रदाय की स्थापना करनी पड़ी और उनकी उदारता यह रही कि अपने सभी शिष्यों को उन्होंने केवल रामावत सम्प्रदाय से बंधने की बात न कहकर अपने-अपने हिसाब से नए पंथ स्थापित करने की सलाह व स्वतंत्रता प्रदान की। परिणाम यह हुआ कि विभिन्न जातियों को धर्मोन्मुख करने का महत्ती कार्य, अस्तित्व में आए अनेक सम्प्रदायों के माध्यम से सुगम हुआ। धनावंश भी रामानन्दजी की अपने शिष्य धनाजी को दी हुई उस सीख का परिणाम है। धनाजी के लिए यह सुगमता थी कि धनावंश में समाहित

सच्चे रिश्ते कुछ नहीं मांगते, सिवाय समय और इज्जत के।

करने के लिए उन्हें अपनी से इत्तर किसी भी जाति का मुंह नहीं जोहना पड़ा। धनाजी जाट जाति से थे और राजपूताना में उस वक्त यह सबसे ज्यादा जन बाहुल्यवाली जाति थी। धनाजी ने अपनी जाति के जाटों को वैराग्य का वरण कर प्रभु भक्ति की ओर उन्मुख होने का आग्रह किया। जिन जाट परिवारों को उनका यह आग्रह उचित प्रतीत हुआ, वे उनके अनुयायी बनकी धनावंशी कहलाए। चूंकि धनावंश एक नव सम्प्रदाय था। धार्मिक सम्प्रदाय में मंदिर, महंत, अनुयायी, भक्ति पद्धति यह अनिवार्य संज्ञाएं हुआ करती है। किसी भी सम्प्रदाय की परम्पराओं का सूत्रपात तो पंथ प्रवर्तक करते हैं, पर उन परम्पराओं का विस्तार शनै–शनै होता रहता है। धनावंश के अभ्युदय काल के अन्यान्य सम्प्रदायों का विस्तार निस्संदेह धनावंश से अधिक हुआ है। किसी भी सम्प्रदाय की उन्नति तथा विस्तार में जितनी सक्रियता और योगदान महंतों का, आचार्यों का हुआ करता है, उससे कम भागिता और सौजन्य अनुयायीगण का भी नहीं होता। कारण अज्ञात है, पर छह–सात दशक से धनावंश की साम्प्रदायिक गतिविधियों में गतिरोध आया है, इससे इसकी आध्यात्मिक उन्नति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रही है।

एक परम्परा थी निहंग महंतों की। पर शिथिलाचार ने लगभग महंतों को निहंग नहीं रहने दिया। धर्म अध्यात्म की ठौर धन–सम्पति के स्वामित्व ने लेना जब से शुरू हुआ, महंतीय व्यवस्था छिन्न–भिन्न होने में देर नहीं लगी। पारिवारिक जंजालों एवं जिम्मेदारियों में उलझा महंत लोक मानस को धर्मोपदेश करे भी तो वह अधिक प्रभाव नहीं रख पाता। सामान्यजन के मूल्यांकन का परिमाप नैतिक एवं आचरण के मूल्यों पर रहता है। पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे। त्यागी, वैरागी, तपस्वी, सेवाभावी, सत्कर्तव्यनिष्ठ महंत जैसी बात कह सकता है, वैसी बात एक सद्ग्रहस्थ महंत कह भी तो नहीं पाता। स्वार्थपरता, अर्थलिप्सा, कीर्तिलिप्सा ने धनावंश की महंतीय व्यवस्था को चौपट कर दिया। रही–सही कसर तब पूरी हो गई, जब महंतीय प्रणाली को कुटुम्बीय नातों से जोड़ दिया। कोई निहंग महंत रह भी गया तो उसने अपने परिवार के ही किसी अबोद बालक को महंत की गद्दी के लिए शिष्यत्व देना अधिक समीचीन जाना। दृष्टि महंत गद्दी की सम्पदा पर रही। अपढ़–अबोध बालक को महंत के लिए अपेक्षित ज्ञान सरणि में से गुजारने को कतई महत्त्व नहीं दिया गया। केवल महंत का ठप्पा लगाने को ही प्रमुखता दी गई। फलस्वरुप एक साथ एक उन्नत महंत परम्परा अस्ताचल में जाने को बाध्य हो गई।

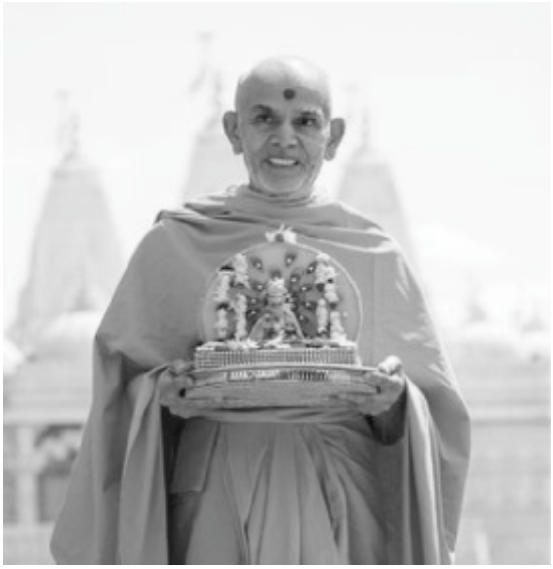

इसके लिए सम्पूर्ण धनावंशी समुदाय भी कम दोषी नहीं है। यह व्यवस्था भंग होती गई, पर किसी ने इस पर अपनी असहमति जाहिर नहीं की। न ही कोई इस बिगड़ती व्यवस्था का सुधार करने के लिए आगे आया। समाज में चिंतनशील व्यक्तियों के अभाव की ओर भी यह स्थिति उंगुली उठाती है। समाज में किसी ने भी हस्तक्षेप की अपनी भूमिका को नहीं जाना। एक–एक महंतद्वारों के बंद होते दरवाजों को निशब्द देखते रहे। जहां कहीं किसी गद्दी पर कोई एकाध महंत बैठा भी हैं तो वह अपनी परम्पराओं और इतिहास से नितांत अनभिज्ञ है। किंकर्तव्यमूढ़, कर्तव्यशून्य तथा इस अस्वस्थ व्यवस्था के मुद्दे नजर अब समाज के सामने किस तरह को विकल्प बचता है, यह नितांत चिंतनीय एवं प्राथमिक मुद्दा है। इस महंतीय व्यवस्था को स्वस्थ कैसे किया जा सकता है? महंत और मंदिर नहीं तो धनावंश को सम्प्रदाय नहीं कहा जा सकता। कतिपय अवहेलना बरतनेवाला अज्ञानी किस्म के लोगों के लिए यह कोई अत्यावश्यक नहीं है कि सम्प्रदाय रहे कि नरहे, जाति रहे कि न रहे, स्वस्थ आध्यात्मिक मूल्य रहे या न रहे। अपने परिवार के पांच–चार जनों की शुभता से आगे उनका सोच ही नहीं रहता। इसलिए वे सदैव निष्प्रयत्न बने रहना सुखकारी समझते हैं। संसार सुरम्य–सुंदर एवं रत्नों से भरा है, किंतु मूढ़ेः पाषाणखण्डेषु, रत्न संज्ञा विधीयते। कोई पत्थर को ही रत्न समझे तो क्या किया जा सकता है। पर स्थिति जब ऐसी अवनति को प्राप्त होने लगे तो चंद जागरूक चेतनाशील लोगों की भूमिका अहम हो जाती है। समाज को संत, साधक, ज्ञानीजन तीनों से लाभ प्राप्त

जिन कार्यों के लिए स्पष्टीकरण और क्षमा न मांगनी पड़े, वही कार्य उत्तम होते है।

होता है। ज्ञानीजन अपने सद्वचनों से किसी भी सम्प्रदाय को पुनर्प्रतिष्ठा दिलवा सकता है।

इस आलेख के प्रारम्भ में इंगित किया गया था कि सम्प्रदाय की उन्नति में महंतजन के अलावा उक्त सम्प्रदाय के एक आचार्य की भूमिका भी महत्ती रहती है। अनेक सम्प्रदायों में आचार्य परस्पर को हम जीवंत रूप में देख रहे हैं। आचार्य स्नेहानुग्रह के साथ पंथ को चारित्रिक जागृति के साथ आगे बढ़ाते हैं। अनैतिकताओं विषमताओं से परे रहने तथा अपने सम्प्रदाय की शिक्षाओं को ग्रहण करने का आग्रह करते हैं। आचार्य सम्प्रदाय को बहुत उच्च अवस्था तक ले जाने का सामर्थ्य रखते हैं, पर अफसोस धनावंश ने इस व्यवस्था की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। जिस पंथ में आचार्य होते हैं, वे निस्वार्थ भाव से अपने समाज में सद्विचार और अध्यात्म की थाती को अक्षुण्ण रखने का महत्ती कार्य करते हैं। उनकी प्रेरणा से आडम्बर, दुर्व्यसन, अंधविश्वासों से मुक्त समाज बनता है। सबसे बड़ी बात– आचार्य ज्ञानवर्द्धक साहित्य की रचना कर समाज को सौंपते हैं। उनकी अनुभव वाणी आगे सम्प्रदाय की परम्परा को जीवित रखने में युक्तिकर होती है।

इसे स्पष्टतया समझना आवश्यक है कि जब तक धनावंशी सम्प्रदाय में लक्ष्यानुरूप कार्य प्रारम्भ नहीं होंगे, इसका परम्परागत आध्यात्मिक स्वरूप विकृत होता जाएगा। एक सर्वहितकारी सम्प्रदाय के परिणाम उपस्थित नहीं हो पायेंगे। भ्रमवश हमारे सम्प्रदाय का जितना उजाड़ हुआ है– उसकी भरपाई के लिए तीनों उपक्रम को पुनः प्राणवान बनाना आवश्यक है। सुविज्ञ महंत बनाए जाएं, भ्रमणशील परिव्राजकों की दीक्षाएं हों, और संभव हो धनावंशाचार्य का पद भी हो तथा उपरोक्त सभी पदों के लिए श्रेष्ठ व्यक्तियों का चयन हो और वे सभी उदात्त मानवीय गुणों से अभिमंडित हों।

निष्ठावान समाजसेवी के रूप में, गृहस्थ से उपराम, वानप्रस्थी सज्जन, परिव्राजक दीक्षा के सर्वथा उपयुक्त हो सकते हैं। समाज के धार्मिक–आध्यात्मिक शैथिल्य तथा अनेक विभ्रमों को ध्वस्त करने में इनकी महत्ती भूमिका हो सकती है।

जानंति केचिन्न च कर्तुमीशाः, कर्तुं क्षमा य न च ते विदंति।
जानंति तत्त्वं प्रभवंति कर्तुं, ते केऽपि लोके विरला भवंति।

कहा गया है कि कतिपय जानते हैं, पर करने में सक्षम नहीं है। कुछ करने में समर्थ हैं, पर जानते नहीं, पर ऐसे व्यक्ति थोड़े होते हैं, जो जानते भी हैं और करने में भी समर्थ होते हैं।

सूझबूझ से भरे समाज चेताओं को हमें परिव्राजक दीक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारा जुड़ाव इस आध्यात्मिक सम्प्रदाय से है तो हमें आध्यात्मिकता के स्तर की बात ही करनी चाहिए। जिज्ञासु अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करने के लिए संतजनों का संग करता है। शास्त्रों का अध्ययन करता है। स्वयं के अवलोक से उसका आत्मोत्थान प्रारम्भ होता है। स्वयं के भीतर उठनेवाले प्रश्नों से उसका साक्षात् होता है। उत्तर भी भीतर से पाता है। संसार का मिथ्यात्व समझ में आता है और वैराग्य की यात्रा प्रारम्भ होती है। वैराग्य से आत्मानन्द प्रकट होता है। वैराग्य कोई जातिगत संज्ञा नहीं है। कोई व्यक्ति लिपटा है सांसारिक गुणों से और अपने जाति नाम वैरागी से प्रभुदित होता है, यह तो स्वयं को छलने जैसी बात है।

इसलिए आध्यात्मिक स्वभाव के जनों को, धनावंश की वास्तविक पहचान जो कि एक वैराग्य परम्परा से अनुस्यूत है से अधिकाधिक जनों को परिचित कराने की आवश्यकता है। महंत और आचार्य, स्वयं की चाहना भर से नहीं बन सकते, उसमें समाजजनों की स्वीकृति आवश्यक है किंतु परिव्राजक दीक्षा के लिए किसी की स्वीकारोक्ति की जरुरत नहीं पड़ती। स्वयं की प्रेरणा से धर्म प्रचार का कार्य करने से कौन रोकता है। परिव्राजक बहुत पहले से होते आए हैं। परिव्राजक स्वयं साधक रूप में होता है और जनकल्याण की उदार भावना से भावित होकर समाज में सद्गुणों, ईश्वरानुराग का प्रसार करने का कार्य स्वेच्छा से करता है। अपने समाज की ऐतिहासिकता और उच्च परम्पराओं से भी वाकिफ कराने का काम भी उसका है।

परिव्राजक सेवा धर्म से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। समाज को उदात्त जीवन चर्या की शिक्षा देना उनका परम कर्त्तव्य है। तुलसीदासजी ने सही कहा है सब तें सेवक धरमु कठोरा। समाज की सेवा का यह कार्य कठिन तो है, किंतु इसका लक्ष्य बड़ा महान है। ज्ञानी, धैर्यवान, परमसंतोषी, मानापमान रहित व्यक्ति ही कुशलता से परिव्राजक धर्म का पालन कर सकता है। वस्तुतः तो परिव्राजक दीक्षा–सेवाव्रत का संकल्प है। सयमपूर्वक इसका निर्वहन परमोच्च स्थितिदायक है। धनावंश में इसका महत्त्व इसलिए अधिक है क्योंकि यहां अनेक विभ्रम समाज को संशय में डालते रहे हैं। पैंतीस महंत थे तो कम से कम बीस–पच्चीस परिव्राजक तो होने ही चाहिए।

मजबूत इंसान को देखकर लोग सोचते हैं कि यह टूटता क्यों नहीं,
लेकिन लोग यह नहीं जानते कि टूटने के बाद वो इंसान इतना मजबूत बन पाया है।

आलेख

धनावंशी समाज के लिए कुछ विनम्र सुझाव

प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

●●●●

गुरुदेव धनाजी महाराज जब तक इस पवित्र धराधाम पर रहे उनके नेतृत्व में हमारे समाज की उन्नति, प्रगति, मान सम्मान एवं यश कीर्ति तीव्रगति से चारों ओर फैल रही थी। उनके परमधाम देवलोक गमन होने के बाद धनावंश नेतृत्व विहीन हो गया और धनावंश को किसी शक्ति की बुरी नजर लग गई। सदियों पूर्व का केंद्रीय नेतृत्व विहीन समाज के स्वतंत्र 35 महंत गुरुद्वारे रहे पर एक भी महंत गुरुद्वारे में पंथ एवं प्रवर्तक की जानकारी के बारे में एक भी चिह्न एवं धनावंश के गौरवशाली अतीत के ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध नहीं है। जिससे समाज में धीरे-धीरे तरह-तरह के कन्फ्यूजन, भ्रामक भ्रांतियां पैदा हो गई और सदियों से चली आ रही भ्रांतियां ही एक दिन समाज के पतन का कारण ना बन जाए?धार करें।धनाजी की जय जयकार करें।

अतीत के ऐतिहासिक घटनाक्रम चीख चीख कर कह रहे हैं- धनावशं एंव पंथ प्रवर्तक की यश कीर्ति को बाधित किया गया।

उस समय जागीरी राज में जाट किसान जाति बुरे दौर से गुजर रही थी। श्री ठाकुर जी महाराज एवं गुरुदेव धनाजी महाराज की कृपा और आशीर्वाद से उस काल की विषम परिस्थितियों से जूझ कर आज भी धनावंशी स्वामी समाज हर क्षेत्र में श्रेष्ठ है। याद रहे जिस जाति का इतिहास और ग्रंथ नहीं होता वह जाति असंगठित,भटकी हुई,दिशाहीन एवं गूंगी होती है।

सौ बात की एक बात। जो समाज अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव को परम पूज्यनीय नहीं मानता और अपने पंथ के प्रति सदैव सजग नहीं रहता उस समाज का धीरे धीरे पतन होना निश्चित है। प्रत्येक समाज बंधु का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने पंथ के प्रति सदा सजग रहे, क्योंकि समाज के बिना किसी का कोई वजूद नहीं होता। समाज है तो हम हैं। आओ हम सब मिलकर भूल को सुधारें।धनावंश की यश कीर्ति को फिर से फैलायें। आओ हम सब मिलकर भूल सुधार करें। धनाजी की जय जयकार करें।

●●●●●

आओ हम सब मिलकर धनावंश के वर्तमान और उज्वल भविष्य के लिए कुछ समाज हितेषी बिंदुओं पर चर्चा एवं विचार विमर्श कर उन्हें धरातल पर स्थापित करें।

(1) धनावंशियों द्वारा धुआंकलां गांव में गुरुदेव भक्त धनाजी महाराज का एक भव्य मंदिर बनाया जाए, अगर किन्हीं कारणों से वहां पर संभव नहीं हो सके तो सबकी सहमति से एक निश्चित स्थान पर भव्य मंदिर बनाया जाए।

एक गलती हमारा अनुभव बढ़ा देती है, और अनुभव हमारी गलतियां कम कर देता है।

(2) अन्य संप्रदाय की तरह हमारा भी गौरवशाली इतिहास ग्रंथ हो।

(3) धनावंश की पहचान पंथ प्रवर्तक गुरुदेव धनाजी महाराज के नाम से हो और गुरुदेव धनाजी की पहचान धनावंश से हो।

(4) धनावंशी स्वामी समाज के जितने भी सामाजिक भवन एवं छात्रावास हैं सब के अंदर गुरुदेव धनाजी महाराज का एक छोटा सा मंदिर हो।

(5) प्रत्येक गांव जहां धनावंशी स्वामी समाज के घर हैं- गुरुदेव धनाजी महाराज का मंदिर बनाया जाए।

(6) शादी विवाह जैसे मांगलिक कार्यों पर कुंकुम-पत्रिका एवं निमंत्रण-पत्र पर पंथ प्रवर्तक गुरुदेव धनाजी महाराज की फोटो हो।

(7) प्रत्येक धनावंशी अपनी जातीय पहचान बनाए रखने के लिए गले में तुलसी माला एवं तिलक और अपने नाम के पीछे दास एवं धनावंशी स्वामी लगाएं।

(8) संपूर्ण धनावंशी स्वामी सभाएं अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव धनाजी महाराज के झंडे तले संगठित रहें।

(9) डोली भूमि मुद्दे को सुलझाने के लिए बड़े स्तर पर प्रयास किए जायें क्योंकि यह मुद्दा समाज का अत्यंत पीड़ादायक नासूर बन चुका है। डोली भूमि मुद्दा समाज की आन बान शान इज्जत और आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है, पर जब तक धनावंशी स्वामी समाज संगठित नहीं होगा तब तक यह मुद्दा हल नहीं होगा, यही कटु सत्य है क्योंकि हक और अधिकार दिया नहीं जाता मजबूत और संगठित समाज अपना हक अधिकार छीन लेते हैं।

(10) समय-समय पर अपने-अपने क्षेत्र में समाज की मीटिंग होती रहे, जिसमें समाज की हर छोटी बड़ी समस्याओं का समाधान हो और समाज विकास के मुद्दों पर चर्चाएं होती रहें।

(11) धनावंश के प्रत्येक माता पिता अपने बच्चों एवं बच्चियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दें।

(12) समाज में बहुत से होनहार प्रतिभाशाली बच्चे एवं बच्चियां ऐसे भी हैं जिनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने की वजह से उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, उनकी शिक्षा का खर्चा वहन करने के लिए सामाजिक संस्थाएं बनें और साथ ही साथ साधन संपन्न परिवार भी उनका सहयोग करें।

(13) समाज के जितने भी सरकारी कर्मचारी बड़े- बड़े अधिकारी हैं वे समाज के लोगों के छोटे बड़े कार्यों में मदद करें और समाज हितेषी कार्य में अपना योगदान दें। धनावंशी स्वामी समाज इनसे बहुत अपेक्षाएं रखता है।

(14) धनावंशी नारी(मातृशक्ति) के सामाजिक संगठन बनें, जिसके माध्यम से नारी शक्ति भी समाज के उत्थान में अपना योगदान दे सके। वर्तमान समय में समाज इस दौर से गुजर रहा है नारी शक्ति के सहयोग के बिना सामाजिक उत्थान संभव नहीं है इतिहास गवाह है हर काल हर युग में नारी शक्ति ने हर क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है ।

(15) आपस में प्रेम भाईचारा दिखाते हुए जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करते रहें एवं अपने पंथ के प्रति सहदेव जागरूक रहें।

लोग अपने आप को किसी न किसी प्रकार से स्वयं को विद्वान बताने की कोशिश करते हैं। अब कोई व्यक्ति पढ़ा लिखा हो या किसी विशेष गद्दी पर बैठा हो,वो कैसे बोल सकता है मुझे पता नहीं, हमारे गुरु कौन थे या हमारे समाज की स्थापना किसने की। यह पता करने में तो जीवन लगाना पड़ता है। अत्यधिक अध्ययन करना पड़ता है। कितने प्रमाण और साक्ष्य प्रस्तुत करने पड़ते हैं। इसमें बहुत मेहनत लगती है। इतनी परेशानी उठाने की बजाय कोई मनघड़ंत कहानी सुना देना आसान काम है। यदि कोई व्यक्ति जिसने इतनी मेहनत की है तो उनकी बात मान लेना भी तो खुद को छोटा दिखता है। इसलिए यह सब चल रहा है।

● श्रीधर स्वामी-सुजानगढ

मिली है जिन्दगी तो कोई मकसद भी रखिये,
सिर्फ साँस लेकर वक्त गवाना ही जिन्दगी तो नहीं।

व्यक्तित्व विशेष

भक्त प्रवर बजरंगदासजी महाराज

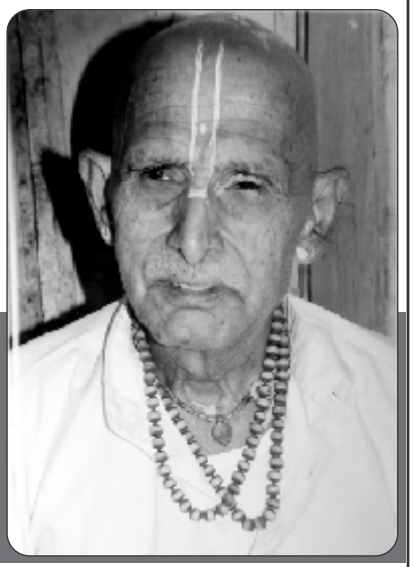

धनावंशी स्वामी सम्प्रदाय में अनेक संत-भक्त हुए हैं। मूलतः गुसांईसर बड़ा गांव के बजरंगदास जी अपने चाचा के आग्रह पर युवाकाल में श्रीडूंगरगढ़ स्थित श्री राधाकृष्ण मंदिर में सेवा-पूजा करने आ गए।

बाल्यकाल से भगवद् भक्ति की ओर उन्मुख बजरंगदासजी भक्ति में ऐसे लौलीण हुए कि वे सांसारिक कार्यों से उपराम होकर दिन-रात अपने इष्ट राधाकृष्ण को ही रिझाने में लगे रहे। राधाकृष्ण के प्रति अतुलित प्रेम के कारण वे निम्बार्क सम्प्रदाय में विधिवत दीक्षित हो गए। एक सदगृहस्थ के रूप में परिवार का पेट पालने के लिए खेती का कार्य करते तब युगल सरकार को अपने पास रखते। राधाकृष्ण की मूर्तियों को वे एक पल भी बिसरा नहीं सकते थे। अपने इष्ट को रिझाने के लिए उन्होंने एक अनूठा तरीका निकाला--जिसकी प्रेरणा शायद उन्हें भक्त कवि सूरदासजी से प्राप्त हुई। सूर और उनकी भक्ति में अत्यधिक साम्य था। अष्टछाप के कवियों में परिगणित सूरदासजी अष्टयाम की पूजा में ठाकुर जी को एक-एक नया भक्ति पद रचकर सुनाते। इसीलिए सूरदासजी के भक्ति पदों की संख्या विपुल है। उन्हीं के साम्य से श्रीबजरंगदास जी द्वारा रचित पद भी सात हजार से अधिक हैं। पद रचते ही वे उसे गाकर अपने इष्ट युगल को सुनाते और विभोर हो जाते। समूचे दिन उनका यही उपक्रम रहता।

बजरंगदास जी महाराज पढे लिखे नहीं थे, केवल अक्षर ज्ञान मात्र से उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता की गीतमय टीका लिख डाली। गीता के दुरूह श्लोकों का उन्होंने सरल हिन्दी-राजस्थानी मिश्रित भाषा में रचाव कर दिया है। वे केवल अपने आत्मानंद के लिए लिखते थे-उन्हें अपने रचे पद छपवाने की कोई लालसा नहीं थी-इसलिए उन्हें छपवाने का तनिक भी प्रयास नहीं किया। पद रचते ही वे मंदिर के श्री विग्रह में जाते-ठाकुर ठकुरानी को सुनाते और तृप्त हो जाते।

जीवन के उत्तरार्द्ध में उनकी दोनों आंखों की ज्योति चली गई। अब वे अधिक प्रसन्न रहने लगे। पुत्रों ने आंखों के ऑपरेशन करवाने का आग्रह किया तो कहने लगे--अब स्पष्ट दिखता है। जिसे देखना है-उसकी छवि से मेरी आंखें चकाचौंध है। प्रातः से लेकर सांय तक वे विग्रह की हजारों प्रदक्षिणाएं कर लेते और उस दौरान कीर्तन चलता रहता।

बहुधा--उस मंदिर में जानेवाले श्रद्धालुजनों ने उन्हें अपने इष्ट से वार्तालाप करते देखा है। यह तो गूंगे का गुड़ है। उनकी इस भगवद् तादात्म्य स्थिति को समझ लेना इतना सरल नहीं है।

उनके जीवन में ढेरों चमत्कार घटित हुए-जिन्हें विज्ञापित करने में उनकी जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। न कभी किसी को बताया। मंदिर में आनेवाले श्रद्धालु जनों को वे कीर्तन करने में लगा दिया करते। ठाकुर प्रीति के ऐसे भक्त इस कलिकाल में विरल है।

चुनौतियों को हमेशा स्वीकार करें क्योंकि इससे या सलफता मिलेगी या शिक्षा।

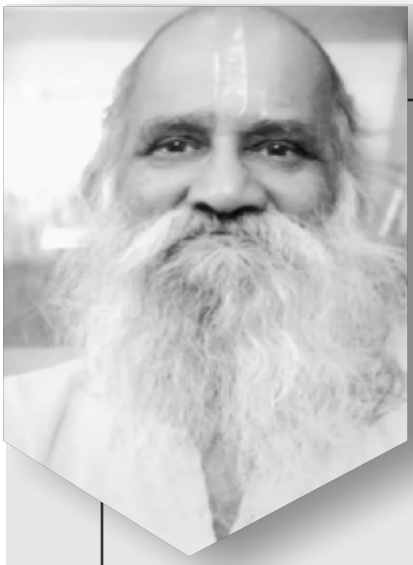

गलता गद्दी के संस्थापक

श्रीकृष्णदास पयाहारीजी

जगत् में कमल-पत्र की भांति निर्लेप रहते हुए आपको जितनी विरक्ति हो गई थी उससे कई गुनी आपकी एक स्थान पर अनुरक्ति भी थी। वह अनुरक्ति असाधारण थी। उससे आपका बिछोह करा देना प्राण-हरण के तुल्य कष्टकर था। इनकी समस्त अनुरक्ति के केन्द्र थे दशरथ-नन्दन श्रीरामचन्द्रजी के कमल-सरीखे कोमल दो अरुण चरण। और उन्हीं के ध्यान में आप निरन्तर मस्त रहते थे।

गृहस्थस्य हि धमोऽभ्य: सम्प्राप्तातिथिपूजनम्।।
अतिथि: पूजितो यस्य गृहस्थस्य तु गच्छति।
निन्यस्तस्मात् परो धर्म इति प्राहुर्मनीषिण:।।

(महा. अनु. 2/19-70)

जगत को दु:खालय कहा गया है। यहाँ सुख-शांति की प्राप्ति संभव नहीं है। हमें जो सुख-शांति की अनुभूमि होती है, वह एक क्षणिक होती है, दूसरे वास्तविक सुख-शांति की छायामात्र होती है। विश्व की सुखदायिनी विभूतियों एवं धन-पुत्रादि को त्यागकर साधु-संत उसी वास्तविक सुख-शांति की खोज में नदी, वन, पर्वतों में भटकते और नाना प्रकार के यातनापूर्ण तप करते है। संत कबीर कहते हैं-

चलौ, चलौ सब, कोइ कहै, पहुंचै बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुर्गम घाटी दोय।।

कञ्चन और कामिनी ये दो दुर्गम घाटियाँ हैं, जो विश्व से, प्रपञ्चात्मक जगत से बाहर नहीं जाने देती। इनको पार करना कठिन होता है। बिहारी ने भी कह दिया है-

या भव पारावार को, उलँघि पार को जाय।
तिय-छवि छायाग्राहिनी, ग्रहै बीचहीं आय।।

इन बातों को सुनकर जब हम इन पर गम्भीरता से विचार करते है तब बड़ी निराशा होती है। हम हतोत्साह हो जाते है। लवण्यमयी स्त्री और विश्व की सुखद सामग्रियों के प्रदाता कञ्चन को त्याग सकना कम से कम हम अज्ञानान्धकार में भटकने वाले जीवों के लिए असम्भव नहीं तो दुष्कर तो अवश्य है। पिर हम क्या करें? हमारे उद्धार का, हमारे तरने का कोई पथ है या नहीं? हमारे शास्त्र उत्तर देते हैं

- पथ है, अवश्य है। हम शास्त्रानुसार धर्म के पथ पर चलें, फिर स्त्री और धन हमें संसार में बांध नहीं सकेंगे, हमें संसार से मुक्त कर देंगे। ये हमें मारने वाले नहीं, तारने वाले बन जायेंगे।

हमारे शास्त्रों ने गृहस्थ के लिए अतिथि-सत्कार की बड़ी महिमा गायी है। उसका प्रत्येक ग्रहस्थ को पालन करना चाहिए। उससे लोक-परलोक दोनों का सुधार होता है। धर्म की वृद्धि होती है, पाप का नाश होता है। आतिथ्यधर्म अत्यन्त पुनीत धर्म है और इसे ब्रह्मचारी, गृहस्थ तथा साधु भी पालन करते हैं।

आपने सुना होगा, महर्षि दधीचने अपना शरीर देवताओं को दान में दे दिया था। शिवि नरेश के उपाख्यान ने भी आप परिचित ही होंगे, किंतु हम आपको कलियुग के एक संत का चरित्र सुनाते हैं। इस चरित्र से आपके मन पर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ेगा।

जब कोई ना समझ रहा तो खामोश हो जाना ही बेहतर होता है,
बहस हमेशा रिश्ते बिगाड़ देती है।

श्रीकृष्णदासजी पयाहारी नामक एक परम तपस्वी संत थे। आप अत्यन्त सादा एवं परोपकारी थे। स्त्री, धन तथा जगत् की किसी भी विभूति के प्रति आपका आकर्षण नहीं था। जगत् में कमल-पत्र की भांति निर्लेप रहते हुए आपको जितनी विरक्ति हो गई थी उससे कई गुनी आपकी एक स्थान पर अनुरक्ति भी थी। वह अनुरक्ति असाधारण थी। उससे आपका बिछोह करा देना प्राण-हरण के तुल्य कष्टकर था। इनकी समस्त अनुरक्ति के केन्द्र थे दशरथ-नन्दन श्रीरामचन्द्रजी के कमल-सरीखे कोमल दो अरुण चरण। और उन्हीं के ध्यान में आप निरन्तर मस्त रहते थे।

जहां सूर्य हैं, वहीं प्रकाश है, की भांति भहां भगवद्भक्ति है, वहीं समस्त सद्गुण हैं, समस्त देवी सम्पदाएँ है। श्रीकृष्णदासजी दया और उदारता के मूर्तिमान् स्वरूप थे और थे प्रेम की जीवित प्रतिमा। समस्त भूतों में आपको अपने श्रीराम के ही दर्शन होते थे। अपने यहाँ आ जाने वाले किसी भी साधु और पाथिक को ही नहीं, पशु-पक्षी तक को आप उसी समष्टि-संचालक स्वरूप समझकर परम आदर प्रदान करते थे और यथा शक्ति उसकी सेवा करते थे।

स्वयं एक गिरिगुहा में रहकर तपश्चरण कर रहे थे। एक बार की बात है, आप अपनी गुफा में बैठे हुए भगवान श्रीराम का ध्यान करते हुए उनका नाम-स्मरण कर रहे थे। एक बार नेत्र खुले तो आपने देखा-गुहा-द्वार पर एक व्याघ्र खड़ा है और उनकी ओर टकटकी लगाये देख रहा है।

यह व्याघ्र इस गुहा-द्वारा पर कभी नहीं आया। श्री कृष्णदासजी ने तुरंत विचार किया। अत: यह मेरा अतिथि है। मुझे इसका सत्कार करना चाहिए। आपने तुरंत अपनी दोनों जङ्घाओं का मास काटकर व्याघ्र के सामने डाल दिया और प्रेमपूर्वक बोले, आप इसे खा लीजिए। मांस खाकर व्याघ्र लौट गया और आप परम संतुष्ट होकर अपने प्रभु के मङ्गलमय नाम का जप करने लगे।

भक्त को अतिथि-सत्कार के लिए जङ्घा का मांस काटकर देने पर भी तनिक भी दुखी न होकर उलटे प्रसन्नता का अनुभव करके अपना भजन करते देखकर भगवान का आसन हिल गया।

श्रीकृष्णदासजी ने देखा देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने खड़े है। कोलम कमल-सरीखे अरुण चरण वक्षःस्थली की माला, मधुर मुस्कान, सजल-जलद-अङ्ग सबकुछ उन्होंने देखा। जी भरकर देखा। प्रभु के कर कमल का शीतल स्पर्श भी पा गये वे।

फिर क्या था? वे धन्य हो गये। सारी पाप-राशि भस्म हो गई। तप उनका सफल हो गया। अनन्त सुख-शान्ति की प्राप्ति हो गई उन्हें। फिर शरीर के कष्ट का पता नहीं रहा-इसमें कौनसी बड़ी बात थी। ●●

दोष किसका...?

धन्ना जी भगत थे। भक्ति पंथ दे दिया और भक्ति का रास्ता बता दिया। आगे का काम खुद धनावंशियो का था। माना कि उस काल में हमारे समाज में कवि- लेखक- विद्वान नहीं हुए या हुए भी तो उन्होंने हमारा साहित्य एवं ग्रंथ नहीं लिखे- चलो कोई बात नहीं, पर सदियों पूर्व हमारे समाज में 35 महंत द्वारे तो रहे हैं, उन्होंने भी समाज के लिए साहित्य ग्रंथ आदि लेखन कार्य नहीं किया। तो भी कोई बात नहीं पर अपने पंथ प्रवर्तक गुरुदेव को पीढ़ी दर पीढ़ी पूजनीय तो मान सकते थे? और समाज को मौखिक रूप से इतना तो बता ही सकते थे कि हमारे पंथ प्रवर्तक गुरुदेव भक्त धनाजी महाराज हैं। और साथ ही साथ महंतद्वारों में पंथ प्रवर्तक गुरुदेव धना जी महाराज से संबंधित जानकारी को किसी न किसी रूप में तो प्रचलित रखते। तब आज समाज में तरह तरह का भ्रम पैदा नहीं होता।

मुझे दुख इस बात का नहीं है कि हमारा साहित्य और ग्रंथ नहीं लिखे गए। मुझे दुख इस बात का है कि हमारा समाज पंथ प्रवर्तक भक्त शिरोमणि गुरुदेव धना जी महाराज को पूजनीय नहीं मानता। मुझे दुख इस बात का है कि हमारा समाज पंथ प्रवर्तक के विषय में तरह-तरह के कन्फ्यूजन में फंसा हुआ है। यह कन्फ्यूजन किसकी देन है? दोष किसको देवें? इसका दोषी समाज है या कोई और या हमारा भाग्य।

● **प्रेमदास स्वामी-खिंयाला**

मन में बदले की इच्छा रखना कायता की पहली निशाली है।
अपने अंदर बदलाव की भावना रखें।

धनावंशी वैष्णवों के लिए संकीर्तन-महिमा

सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में ध्यान, याग, अर्चन से जो फल प्राप्त होता हैं, वह फल कलिकाल में नाम कीर्तन से ही प्राप्त हो जाता हैं-नाम कीर्तन ही सभी गुणों का सार हैं; इतना ही नहीं, अपितु संसार-सागर पार कराने में वह नौंका रूप भी हैं।

इस विकराल कलिकाल में आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक-इन तीनों प्रकार के तापों से संतप्त प्राणियों के कल्यार के लिए संकीर्तन परम उपादेय एवं सरल साधन है-सम्-सम्यकरूपेण कीर्तनम्-- संकीर्तनम् इस व्युत्पति के अनुसार विस्तार से कथन-- गुण-नाम-कीर्तन करना ही संकीर्तन कहलाता है। श्रीभागवतकार कहते हैं--कलियुग में सुन्दर बुद्धिवाले व्यक्ति शरणागतवत्सल भगवान् संकीर्तन-महायज्ञ के द्वारा ही यजन करते हैं--

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम्।
यज्ञैः संकीर्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः।।
(श्रीमद्भा.11/5/32)

कलियुग मे भगवान के श्रीबिग्रह की छटा नील मणियों की उज्वल कान्तिदारा की तरह ही उज्वल होती है। वे हृदय आदि अङ्ग, कौस्तुभ आदि उपाङ्ग, सुदर्शन आदि अस्त्र और सुनन्द प्रभृति पार्षदों से संयुक्त रहते है। कलियुग में श्रेष्ठ बुद्धिसम्पन्न पुरुष ऐसे यज्ञों के द्वारा उनकी आराधना करते हैं, जिनमें नाम, गुण, लीला आदि के कीर्तन की प्रधानता रहती है।

कीर्तन करने से अपने-पराये जनों के भगवत्प्राप्ति में प्रतिबन्धक दोषों की निवृत्ति होती है। भगवद्गुण कीर्तन का ही दूसरे लोग श्रवण करते हैं, अतः श्रवण की अपेक्षा कीर्तन का

माफी वही दे सकता है जो अंदर से मजबूत हो।
खोखले इंसान तो सिर्फ बदले की आग में जलते रहते है।

महत्त्व अधिक है। भगवत्प्रपन्न हुए बिना जीव की कीर्तन करने की योग्यता नहीं होती। अत: शरणागत जीव भगवान् की प्रपत्ति द्वारा शनै:-शनै: मायिक संसार से मुक्त होता जाता है। गीता में भगवान् कहते हैं, जो मेरी शरण में आते हैं, वे इस माया को पार कर जाते हैं,-

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।

संकीर्तन तीन भेद हैं-(1) नामकीर्तन, (2) लीलाकीर्तन और (3) गुणकीर्तन। इस प्रकार भगवान् के नाम, लीला और गुणों का ऊँचे खरसे गान ही कीर्तन कहलाता है। यह भागवत धर्म के अनुसार है। श्रीकृष्णभगवान् के नाम भी अनन्त है, उनमें से अपनी रुचि के अनुसार किन्ही का चयन करके कीर्तन करें। नामो भगवान् तो एक हैं, यद्यपि उनके नाम अनेक है। उनसे प्राप्य वस्तु एक ही है-

संकीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम्।
(श्रीमद्भा. 6/3/24)
नामलीलागुणादीनां उच्चैर्भावानुकीर्तनम्।।
(भक्तिरसामृतसिन्धु)

भगवन्नामामृत-रस का पान करने से महापातपुञ्ज नष्ट हो जाते हैं तथा कीर्तनकार का जीवन मङ्गलमय एवं धन्य हो जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण मङ्गलरूप हैं, अत: उनके नाम भी मङ्गलरूप हैं। उनके उच्चारण से व्यति मङ्गलमय हो जाता है। संकीर्तन श्रेष्ठ वाचिक तप है। वह वाणी को शुद्ध कर मधुर-मधुर रसाखादन द्वारा आत्मा को पावन कर भगवत्सस्वरूप साक्षात्कार के योग्य बनाता है।

भगवन्नाम में जैसी शक्ति है, वैसी अन्य प्रायश्चितों में नहीं है। इससे पाप समूल नष्ट हो जाते हैं।

तस्मात् संकीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम्।
महतामपि कौरच्य विद्धचैकान्तिकनिष्कृतिम्।।
(श्रीमद्भा. 6/3/31)

बड़े-बड़े पापों, और पाप-वासनाओं को निर्मूल कर डालने वाला सर्वोत्तम प्रायश्चित यही है कि केवल भगवान् गुणों, लीलाओं और नामों का कीर्तन किया जाय। यह बात भागवत में छठे स्कन्ध के अजामिलोपाख्यान स्पष्ट है। भगवन्नाम-कीर्तन-श्रवण से अमङ्गलकारी दोषों का नाश होता है तथा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों पुरुषायों की प्राप्ति एवं चार प्रकार के वाचिक पापों की निवृत्ति होती है।

कृष्ण नाम अकेले सभी दोषों को दूर कर डालता है। इस कलिकाल में दोषों की बहुलता के कारण मन का निरोध न होने से भगवत्परता का अभाव होता है। सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में ध्यान, याग, अर्चन से जो फल प्राप्त होता है, वह फल कलिकाल में नाम कीर्तन से हो प्राप्त हो जाता है-नाम कीर्तन ही सभी गुणों का सार है; इतना ही नहीं, अपितु संसार-सागर पार कराने में वह नौका रूप भी है। परमाभागवत राजा परीक्षित् को महामुनीन्द्र श्रीशुकदेवजीने द्वादश स्कन्ध के तीसरे अध्याय की समाप्ति (श्लोक 51) में कहा है-

दोष से भरे इस कलियुग में यह एक महान गुण है कि श्रीकृष्ण का कीर्तन करने से मनुष्य आसक्ति रहित होकर परमधाम चला जाता है।

रिश्ते बरकरार रखने की सिर्फ एक ही शर्त है, भावना देखें, संभावना नहीं।

मन की चञ्चलता को रोकने के लिए कीर्तन एक परमोपयोगी उपाय है। इससे ध्यान–समाधि और निरतिशय सुख की प्राप्ति होती है। शास्त्रों तथा संतों ने भगवान् के नाम को तप–दानादि सभी धर्मों से अधिक माना है।

वेद कहते है–

मर्ता अमर्तस्य ते भूरि नाम मनामहे।
विप्रासो जातवेदसः।। (ऋक्.8/11/5)
आस्य जानन्तो नाम चिद् विवक्तन (ऋक्.1/156/3)

पराङ्मुखी जीवों को भगवन्नाम लेना कठिन है; क्योंकि वे लोग उसके महत्त्व को नहीं समझते। भगवान् के सभी नामों में एक–सी ही शक्ति है। ऐसे महत्त्वशाली भगवन्नाम संकीर्तन में वर्णाश्रम का भी नियम नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री, अन्त्यज आदि जो कोई भी विष्णु भगवान के नामों का कीर्तन करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त होकर भगवान को प्राप्त कर लेते हैं। यदि कोई प्राणी मरते समय कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! उच्चारण करता हुए प्राण त्याग दे तो वह एक ही नाम से मुक्त हो जाता है, अवशिष्ट दो उच्चरित नाम ऋणी होकर स्थिर रहते हैं।

भगवन्नाम–कीर्तन के लिए देश–काल का को कोई नियम नहीं है। इसके लिए विशेष पवित्रता आदि की भी आवश्यकता नहीं है। सर्वदा, सर्वत्र सभी अवस्था में भगवन्नामोच्चारण करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। अतः भूत–भविष्य–वर्तमानकालीन पापों का नाशक हरि कीर्तन ही है। फिर भी भगवत्प्रेमी जीवों को पापों के नाश पर अधिक दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। उसे तो भक्तिभाव की दृढता के लिए भगवान के चरणों में अधिकाधिक प्रेम बढ़ता जाये, इस दृष्टि से अहर्निश नित्य–निरन्तर भगवान के मधुर–मधुर नामों का जप करते रहना चाहिए। जितनी ही अधिक निष्कामता होगी, उतनी ही नाम की पूर्णता प्रकट होती जायेगी, अनुभव में आती जायेगी और भगवान वश में होते जायेंगे। भगवान्नाम ग्रहण करने से भगवान प्रेम बन्धन से बंधकर भक्त के हृदय में निवास करते हैं, अन्यत्र कहीं नहीं जाते। नामकीर्तन वशीकरण मन्त्र सिद्ध होता है। द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान् कहते हैं–

यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम्।
ऋणमेतत् प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति।।

यज्ञादि वर्गों में देश, काल, पात्र, श्रद्धा, हवि, मन्त्र, तन्त्र आदि अपेक्षित हैं। वे इस घोर कलिकाल में सुलभ नहीं होते, अतः भगवान्नाम–संकीर्तन की प्रधानता प्रतिपादित है। इसिलिए भगवान् के अवतार नाम वासुदेव, देवकीनन्दन, कौसल्यानन्दन, वामन, नृसिंह आदि एवं लीला–नाम–गिरिधारी, पूतनारि, कालियमर्दन, कंसनिकन्दन, मुरारि, दैत्यारि, रावणारि आदि तथा गुणनाम–भक्तवत्सल, शरणागतवत्सल, दीनदयाल आदि नामों का कीर्तन करना चाहिए। इसी प्रकार भगवान की भक्तमनोरञ्जनी दान–लीला, रासलीला, बाल लीलाओं का भी गान करना चाहिए।

कलिजुग सस जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बमल भव तर बिनहिं प्रयास।।

***

दोष अनुयायी समाज का

ऐसा कहना उचित नहीं है कि राजपूत धनावंशी स्वामियों के विकास में बाधा बने। मैंने अपने अनुसंधान में उनको जगह जगह सहयोग करते ही पाया है । न जाट ही धनावंश की बाधा बने। सबने धनावंशी स्वामियों को भरपूर मान–सम्मान दिया। अध्यात्म से कटे कटे तो स्वयं धनावंशी रहे। उसके भी बहुत से कारण हैं। अनपढपना कल भी हावी था और आज भी हावी है। धनाजी तो भक्त थे। भक्ति पंथ दे दिया और भक्ति का रास्ता बता दिया। आगे का काम धनावंशियों का खुद का था।

आप मानो या ना मानो––किसी भी पंथ को आगे बढाने में उस पंथ के कवि–लेखकों का बड़ा भारी योगदान रहता आया है। विश्नोइयों से कुछ वर्ष पहले धनावंश की स्थापना हो चुकी थी, विश्नोइयों ने तुरत अपने पंथ का साहित्य लिखना प्रारम्भ किया। स्वयं जांभोजी के मात्र 123 पद ही हैं। जबकि उनके अनुयायी जनों ने उसी काल में 400 से अधिक ग्रंथ लिख डाले। जो आज विश्नोई पंथ के आधार ग्रंथ है। ऐसा ही कार्य जसनाथियों ने किया––काफी उम्दा साहित्य लिखा। जबकि हम शुरु से ही पंथ के प्रति अवहेलना बरतनेवाले रहे हैं। लिखना तो दूर––लिखे हुए को सुरक्षित भी नहीं रख पाए। अगर साहित्य सामग्री सुरक्षित होती तो हमारे पंथ का स्वरूप आज दूसरा ही होता। इतना ही नहीं––लिखने पढने में अब भी हमारी रुचि होती तो अज्ञानियों की जमात पैदा होती क्या? समझो––धनावंशी का बिगाड़ न किसी जाट ने किया और न ही किसी राजपूत ने। किसी को झूठा दोष कदापि नहीं देना चाहिए।

मैं शून्य हूँ मुझे पीछे ही रखना क्योंकि मेरा फर्ज तो सिर्फ मेरे अपनो की कीमत बढ़ाना है।

आलेख

सीताराम दास
परिव्राजक

अनुभव की बात

अपने यह दास सम्बोधन से अलंकृत होने वाला समाज है। रामावत, रांकावत, कूबावत, फरसावत, पीपावत और धनावंश इनका कोई न कोई तो गुरु है, जिसने कि इतने समूह को भक्तिभाव व प्रभु पूजा में अग्रसर कर दिया। इतने बड़े समूह का उद्धार या सुधार कोई समर्थ पुरूष ही कर सकता है। परमात्मा भी उस पुरुष को नियुक्त करते हैं, जिससे बहुत से लोगों को फायदा हो।

श्री धनावंशी स्वामी समाज से नम्र निवेदन पूर्वक जयठाकुरजी की। बंधुओं, हम सबके अनुभव में आई हुई बात है, किन्तु कुछ लोगों ने इसको महत्व दिया और कुछ लोगों ने निरर्थक समझा। मैंने बचपन से ही सामाजिक चर्चा सुनी- आज से सत्तर वर्षों पहले तक कुछ लोग अपने समाज को धनाजी महाराज से निर्मित बतलाते थे और कुछ किसी और के द्वारा। जो धनाजी से बतलाने वाले थे वे तो स्पष्टता से कह देते थे, पर न स्वीकारने वाले लोगों के पास दूसरे पंथ प्रवर्तक का नाम नहीं था। उनसे सिर्फ और सिर्फ सनकादि ऋषियों का ही नाम सुनते आ रहे थे। या कह देते थे कि धनावंशी तो श्री ठाकुरजी महाराज के चरणों से ही उत्पन्न हुए हैं अनादि काल से। लेकिन करीबन

**समय और भाग्य पर कभी अहंकार मत करो,
क्योंकि यह दोनों ही परिवर्तनशील है।**

पन्द्रह बीस सालों से धनावंश के पांच सात गुरुओं के नाम सामने आने लगे हैं और साथ में श्री ठाकुरजी महाराज के चरणों से भी भाख देते हैं। मैं आज से पहले ज्यादा गुरु महिमा से सहमत नहीं था और अब भी नहीं हूं, क्योंकि गुरु की बजाय- मैं पहला दर्जा परमात्मा को ही देता हूं। पर आज मैं इस सामाजिक स्थिति को देखता हूं, तो मुझे आभास होता है कि गुरु और परमात्मा का दर्जा बिलकुल समान अवस्था में है। बन्धुओं, परमात्मा ने हमें मनुष्य जैसी श्रेष्ठ योनि में तो भेजा है, परन्तु गुरु के बिना यह योनि हम सफल नहीं कर सकते। जैसे सांसारिक हर काम के लिए किसी न किसी गुरु या अध्यापक की जरूरत होती है, उसी प्रकार अध्यात्म ज्ञान के लिए भी गुरु का ही महत्व है। अपने यह दास सम्बोधन से अलंकृत होने वाला समाज है। रामावत, रंकावत, कूबावत, फरसावत, पीपावत और धनावंश इनका कोई न कोई तो गुरु है, जिसने कि इतने समूह को भक्तिभाव व प्रभु पूजा में अग्रसर कर दिया। इतने बड़े समूह का उद्धार या सुधार कोई समर्थ पुरूष ही कर सकता है। परमात्मा भी उस पुरुष को नियुक्त करते हैं, जिससे बहुत से लोगों को फायदा हो।

आप कहोगे कि फायदा तो हम सबको खुद को ही करना है। हम भगवान का भजन करेंगे तो स्वत: हो जायेगा? मान लिया, भगवान का भजन करने से ही कल्याण होता है। फौज चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो पर उसे हुकूमत में रखने वाला राजा न हो तो फौज फतह नहीं पा सकती। सब सैनिक अपनी अपनी मर्जी से चलने लगें तो वह फौज तुरन्त ही नष्ट हो जाती है। हजार पशुओं को भी एक ग्वाला संगठित रख लेता है। इसी प्रकार समाज को (संप्रदाय को)गुरु की आवश्यकता रहती है। गुरु से प्रभावित समाज ही संगठित रह सकता है।

प्रश्न है --भगवान से प्रभावित समाज संगठित नहीं रह सकता क्या?

उत्तर है--नहीं रह सकता।

संप्रदाय का भाव अलग होता है, उसकी विशेष स्थिति होती है, उसका उद्देश्य गुरु प्रणीत मार्ग से परमात्म प्राप्ति का होता है। वह मार्ग गुरू के द्वारा ही सुझाया हुआ होता है ।साधारण मनुष्यों का विशेष भाव नहीं होता। विशेष भाव के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यहां पूरे समाज की बात है। सर्वसाधारण में भी इका दुका तो भगवान का भक्त जरूर होता है। जो कोई साधु संत से या अपने माता पिता या किसी घटना परिस्थिति से प्रभावित होकर इस मार्ग में अग्रसर होता है। और शिष्यपन न स्वीकार करते हुए भी प्रभावित हो जाता है। पर यह बात कहीं कहीं लागू होती है।

सनकादि ऋषियों से समाज आरम्भ होता तो भागवत में उल्लेख होता। धनवंतरि से भी धनावंश का उल्लेख मिलता नहीं है। धनेष्ठा का खुद का भी प्रमाण नहीं और भी कई गुरुजनों से भूषित करते हुए मेरे भाईयों को देखता हूं, तो मै सन्न रह जाता हूं । हृदय कराह उठता है। इतना श्रेष्ठ समाज इतने ही दिनों में छिन्न-भिन्न होने को तैयार हो गया।

वाह! प्रभु तेरी माया, तेरा पार कोई नहीं पाया ।

मैं आज से पहले ज्यादा गुरु महिमा से सहमत नहीं था और अब भी नहीं हूं, क्योंकि गुरु की बजाय- मैं पहला दर्जा परमात्मा को ही देता हूं। पर आज मैं इस सामाजिक स्थिति को देखता हूं, तो मुझे आभास होता है कि गुरु और परमात्मा का दर्जा बिलकुल समान अवस्था में है।

कुछ लोग खुशबू की तरह होते हैं, जो रोज दिखाई तो नहीं देते पर महसूस होते हैं।

व्यक्तित्व विशेष

परिव्राजक कलम

विचार के सोपान

सीताराम दास
परिव्राजक

प्रिय समाज बन्धुओं। मनुष्य जीवन के तीन मुख्य पहलू होते हैं।

1 जीवनयापन ।
2 एकता ।
3 आस्था ।

जीवनयापन के लिए विद्या व उद्योग काम में आते हैं। एकता के लिए इतिहास काम में आता है। और आस्था के लिए आचरणों की आवश्यकता पडती है। जैसे उद्यमशील हुए बिना जीवनयापन कठिन होता है, उसी प्रकार इतिहास बिना एकता कठिन होती है। उदाहरण के तौर पर जहां इतिहास में संदेह होता है, वहां इतिहास नया रूप धारण करने लगता है, जैसे दुर्योधन और कर्ण। देश काल तथा परिस्थिति के कारण अगर कोई संदेहजनक स्थिति पैदा हो भी जाय तो हमें आपस में विचार विमर्श करके संदेह का निवारण करना चाहिए। संदेह की स्थिति में कुछ न कुछ अवशेष तो मिल ही जाते हैं। आस्था का स्थान तो पहला होता है पर आज के भागम भाग जीवन में हमने तीसरे स्थान पर भी पूरा महत्व नहीं रखा है, इस कारण से हमारे मन में भय तथा शंकाओं ने घर कर लिया है। कुछ भाई लोग बोलते हैं कि जाटों नें हमें ऐसा कह दिया, या वैसा कह दिया। तो यह अपनी आस्था की कमी है, जो दूसरों का दोष बता रहे हैं। दूसरों का दोष है नहीं। वैरागी को ये बातें सुनने का वक्त ही नहीं मिलता। उसका उद्देश्य ही सहन करने का होता है। और जो सहन करता है, उसे कोई कहता भी नहीं। हम लोग नाम तो चाहते हैं- वैरागी और राग द्वेष में डूबे

आस्था का स्थान तो पहला होता है पर आज के भागम भाग जीवन में हमने तीसरे स्थान पर भी पूरा महत्व नहीं रखा है, इस कारण से हमारे मन में भय तथा शंकाओं ने घर कर लिया है।

जिम्मेदारी के आगे सपने हमेशा हार जाते है।

हुए हैं कंठों तक ? मेरा यह उद्देश्य नहीं है कि मैं मेरे व समाज बन्धुओं के पूर्वजों के सम्बन्ध में कुछ टीका टिप्पणी करूं, क्योंकि समाज में कोई भी मेरे लिए दूसरा नहीं है, और मैं समाज के लिए दूसरा नहीं हूं। पूर्वज भी हम सबके एक ही हैं। टिप्पणी हम एक दूसरे की करते हैं तो वह हमारी ही होती है। तथा परिस्थिति वश अपने में एक दूसरे को कहा भी जाता है ।यह बात हम जरूर सहन नहीं कर सकते जो कि कई भाई लोग कहते हैं कि हम इतिहास के विरोध में हैं। क्योंकि हम तो हमारे इतिहास की जानकारी चाहते हैं। हम नकारात्मक सोच में नहीं जीना चाहते। हम आप सभी से निवेदन करते हैं- आप हमारे सामने अग्रणी स्थान पर विराजमान होकर हमें अच्छे से अच्छा सुझाव प्रदान करें। नजदीकी अवशेषों का आधार लेकर समस्या का निवारण जल्द से जल्द आवश्यक है।

प्रेमी समाज बन्धुओं विनय पूर्वक अभिवादन ।सबने अपने अपने विचार व्यक्त किये सबके मनोभाव अच्छे ही हैं। कुछ उन्नीस बीस का फर्क सबमें ही रहता है ।दरअसल बात यह है कि हम धनाजी महाराज को पंथ गुरु के रूप में मानने वाले कम प्रतिशत हैं। इसी कारण से हमारी सभी योजनाएं प्रस्ताव पत्र में ही रह जाती है। चेतन जी ने धनावंशी सदाचार समिति नाम देकर कार्यकारिणी शुरू इसीलिए की थी कि समाज के काम में उनका कोई दखल न हो। कार्यकारिणी सक्षम हो कर प्रस्तावित योजनाओं को साकार रूप दे तो बहुत अच्छा। सदस्य बनने में कोई खर्च का भार न पड़े- यह तो बहुत अच्छी बात है।

अकेले तो कोई कुछ कर नहीं सकता हरेक के लिए तो अपना घर ही पूरा होता है। समाज का कब करे। रही बात हम हैं इतनें ही आपस में टकराव का माहौल बनायेंगे तो फिर हो गए समाज के काम। हां एक बात मेरे अब ध्यान में आई है। आज चेतन दास जी ने एक भूल की है। वह यह कि जो दो प्रश्न पूछे गए हैं उन दोनों का अर्थ तो एक ही बनता है। उतर देने वालों के उतर सही थे। और उन पर कोई आरोप भी नहीं कि उतर सही ही देना पडेगा। बन्धुओं इसमें भी खर्चा तो कुछ लगा नहीं। चेतन जी ने आज तक जो किया वह समाज को बिना खर्चा किये फायदा मिले- वही किया है। समाज के पास धन है तो समाज हित के काम में अवश्य लगावें। हम जैसे हैं वैसे आपके लिए तैयार हैं।

धनावंशी सदाचार प्रचार समिति

संयोजक -सूबेदार जगदीश प्रसाद स्वामी

* सदस्यगण *

1. बस्तीराम जी स्वामी-मेड़तासिटी
2. डॉ घनश्यामदासजी स्वामी-नोखा
3. चेतन स्वामी-श्रीडूंगरगढ़
4. सीतारामदासजी परिव्राजक
5. अर्जुनदासजी स्वामी-हरियासर
6. मनोहरलालजी स्वामी-दौलतपुरा
7. सुभाष जी स्वामी- सीकर
8. राधेश्यामजी गोदारा-नागौर
9. जगदीशजी स्वामी-जेतासर
10. कौशलजी स्वामी-जोधपुर
11. लालचंदजी स्वामी-धोलिया
12. पूसारामजी स्वामी--बाड़ा
13. विकासजी स्वामी-कपूरीसर
14. पुखराजजी स्वामी-राठील
15. नाथूरामजी स्वामी- भीडासरी
16. हीरालालजी स्वामी-राजसंमद
17. श्रीधरजी स्वामी--सुजानगढ
18. मघदासजी स्वामी-टालनियाऊ
19. लक्ष्मणदासजी स्वामी-निम्बी जोधा
20. मानदासजी स्वामी-सोनपालसर
21. शशिकान्तजी स्वामी-राजपुरा
22. प्रेम दासजी स्वामी -खिंयाला
23. रघुनाथजी स्वामी-डीडवाना
24. लक्ष्मणजी स्वामी-पलसाना
25. सुखदेवजी स्वामी-कल्याणसर
26. गोविन्दजी स्वामी-कानूता

जिंदगी और आसान हो जाती है जब अपनों का अपनेपन से साथ मिले।

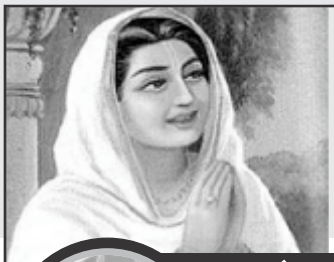

ठाकुरजी के दो अनन्य भक्त
भक्त धनाजी और कर्माबाई

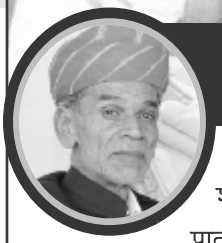

प्रेमदास स्वामी
खिंयाला

भक्ति काल की 15वीं शताब्दी के आसपास जाट जाति से प्रातः स्मरणीय दो महान भक्त राजस्थान की पवित्र धरती पर अवतरित हुए। भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज एवं भक्त शिरोमणि कर्माबाई।

भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज के इष्ट देव त्रिलोकीनाथ भगवान ठाकुर जी महाराज थे। भगत धनाजी महाराज ने अपनी जाट जाति के लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। भक्त धनाजी महाराज ने सदैव ब्राह्मणवादी आडंबरों का खंडन करते हुए आत्म शुद्धि से प्रभु से सच्चा प्रेम करने के लिए सरल एवं सुगम भक्ति का उपदेश दिया था। गृहस्थी धर्म का पालन करते हुए जीवन यापन के लिए अपना मूल काम खेती का कार्य करें, घर आए अतिथियों, साधुजनो एंव भूखों को भोजन दें और सच्चे मन से अपने इष्ट देव ठाकुर जी महाराज के प्रति सच्ची प्रीति रखकर उनकी सेवा एवं पूजा करें। उनकी सरल एवं सुगम भक्ति मार्ग से प्रभावित होकर उस समय के बहू संख्य जाट समाज से बहुत से लोग उनके अनुयायी बने जो कालांतर में धनावंशी स्वामी कहलाए। धनावंशी स्वामी समाज की स्थापना भक्त शिरोमणि गुरुदेव धनाजी महाराज ने की थी। ऐतिहासिक प्रमाणिक तथ्य से भी यह बात सही सिद्ध होती है और अन्य संप्रदायों का भी यही मत है, पर आश्चर्य तो इस बात का है कि सच्चाई को जानते हुए भी धनावंशी स्वामी समाज ने कभी भी अपने पंथ प्रवर्तक भक्त शिरोमणि गुरुदेव धनाजी महाराज को परम पूजनीय नहीं माना। समाज के धर्मगुरु महंतो ने भी सदैव इस सत्य को दबाए रखा। आखिर क्यों? क्या धनाजी महाराज का यही दोष था कि वे जाट जाति से थे। भगत धनाजी महाराज घर के रहे ना घाट के। जाटों से अलग पंथ बनाकर साध बन गए तो उनको जाटों ने महत्व नहीं दिया और न उनके पंथ के धनावंशी स्वामियों ने कभी उनको पूजनीय माना। भले ही न मानें पर उनको पूरी दुनिया ने पूजनीय माना। भला हो हिंदू धर्म रक्षक सिखों का, जिन्होंने उन्हें मान और सम्मान देखकर उनके जन्म स्थान धुआंकला में भक्त धनाजी महाराज का भव्य गुरुद्वारा बनवाया। पूरे हिंदू समाज में भक्त शिरोमणि गुरुदेव धनाजी महाराज का नाम आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है, पर उनको वह सामान और उच्च स्थान धनावंशी समाज की ओर से नहीं मिला जिसके वे हकदार थे। भगत धना जी महाराज ने अपने अनुयायियों को इष्ट देव त्रिलोकीनाथ भगवान ठाकुर जी महाराज की पूजा, सेवा भक्ति करने का कहा था।

भगत शिरोमणि कर्मा बाई का जन्म जाट परिवार में हुआ। भगवान ठाकुर जी महाराज के प्रति अनन्य प्रीति एवं निश्चल भाव से भक्ति प्रेम रखने वाले जीवणजी डूडी के घर हुआ। भक्त शिरोमणि करमा बाई को भी वह उच्च स्थान नहीं मिला, जिसकी वह हकदार थी। त्रिलोकीनाथ भगवान ठाकुर जी महाराज भगत धनाजी की सच्ची और निश्चल भक्ति से प्रसन्न होकर उनके हाथ की बनाई बाजरे की रोटी खाई एवं सदैव के लिए उनके हाली बनना स्वीकार कर उनके साथ रहे।

त्रिलोकीनाथ भगवान ठाकुर जी महाराज भगत शिरोमणि कर्मा बाई की निश्चल भक्ति प्रेम से प्रसन्न होकर उनके हाथ का बनाया हुआ बाजरे का खिचड़ा खाया। जगन्नाथपुरी में भगवान जगन्नाथ के मंदिर में आज भी प्रथम भोग करमा बाई की रसोई में बना हुआ बाजरे के खीचड़े का ही भोग लगता है। सौ बात की एक बात भगत धनाजी और भगत कर्मा बाई जैसे भगत दुनिया में विरले ही होते हैं।

वक्त से हारा या जीता नहीं जाता, सिर्फ और सिर्फ सीखा जा सकता है।

आपके पत्र–आपकी भावनाएं

यह था पंचम अंक

श्री धनावंशी हित मासिक पत्रिका के दो अंक मई व जून के कल श्री धनावंशी हित ग्रुप में श्री चेतनदास जी द्वारा शेयर किए गए। काफी लंबे इन्तजार के बाद दोनों अंक पढ़ कर अपार खुशी की अनुभूति हुई। और ऐसा लगा कि श्रीचेतनदास जी द्वारा समाज के विकास व उत्थान की दिशा में किए जा रहे प्रयास जरूर सफल होंगे। हर समाज की अपनी एक पत्रिका होती है, वैसे ही हमारे धनावंशी समाज की भी मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है तो इससे हम बहुत गर्व महसूस करते हैं। इस बार मई के अंक में जिन धनावंशी भाइयों ने कोरोना वॉरियर बनकर देश वह समाज हित में जो योगदान दिया उनके बारे में पढ़कर बहुत खुशी की अनुभति हुई। साथ ही चेतन दासजी द्वारा किया गया अनुरोध हमें धनावंशी ही रहना चाहते हैं–पढ़कर अच्छा लगा तथा धनवंश की प्रगति में नारी शक्ति के योगदान पर लिखे लेख सुमन स्वामी, सीताजी स्वामी, के द्वारा बहुत अच्छे लगे। इसके साथ ही धनावंशी नारी के प्रश्नों के विशद परिचर्चा में भाग लेने वाली धनावंशी नारी सुमन स्वामी , वीणा जी स्वामी , चेतना जी स्वामी,अंजू जी स्वामी , कमला जी स्वामी सीता जी स्वामी, डॉक्टर उमेश जी स्वामी के विचार पढ़कर बहुत गर्व महसूस हुआ तथा धनावंश में नारी की उन्नति पर लिखे गए आलेख ब्रजदास जी स्वामी, कसान सेवानिवृत्त रघुनाथ प्रसाद जी स्वामी के विचार भी बहुत सराहनीय हैं ।श्री धनावंशी हित पत्रिका के प्रकाशन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले संपादक एवं प्रकाशक श्री चेतन दास जी को मेरा बारम्बार नमस्कार एवं प्रणाम जो धनावंशी हित में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

-छगन स्वामी पाली

धनावंशी हित––हमारे समाज की एकमात्र पत्रिका है। समाज की ही सब सामग्री है इसमें। नारी अंक बहुत ही अच्छा है और धनावंशी समाज के स्त्री वर्ग के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा गया है। समाज के दूसरे विषयों की भी उपयोगी सामग्री है। सब से विशेष आग्रह है– समाज की इस पत्रिका को जरूर पढ़ें।

-बस्तीराम स्वामी, मेड़ता सिटी

आज श्री धनावंशी हित पत्रिका का मई अंक पढा।अच्छा अंक है–विशेष कर नारी उत्थान पर प्रकाश डाला गया है। समय बदलेगा। पत्रिका का कार्य शानदार है ।

-दुर्गाराम स्वामी, नाथवाणा

आदणीय चेतनजी आपको मैं हृदय से आदरपूर्वक शत शत प्रणाम करता हूं ।आप सही मायने में धनावंशी समाज के शुभ चिन्तक हो। बरसों पहले से मैं विचार करता था कि मेरे धनावंशी समाज की भी पत्रिका निकलनी चाहिए। मेरा सौभाग्य है कि मेरी मुलाकात आपसे हुई और हमने ये सपना देखा और इस सपने को पूरा करने का जिम्मा उठाया। हमारे

प्रशंसा और निंदा हवा के झोंके हैं, जिसमें समझदार व्यक्ति कभी नहीं बहते।

समाज बंधुओं ने सब की सहायता से इस सपने को पूरा किया। चेतनजी का जितना आभार व्यक्त किया जाय उतना कम है। उनके प्रयास की हम सभी दिल से सराहना करते हैं। धनावंशी नारी अंक तैयार कर ये साबित कर दिया कि उन्हें समूचे धनावंशी समाज से प्यार है। मैं उनकी इतनी सुंदर विचार धारा को प्रणाम करता हूं।

-रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद

धनावंशी हित का मई अंक पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। बहुत से समाज बन्धुओं ने अपने समाज के उत्थान के लिए सुंदर विचार रखे हैं। उन सभी का हृदय से आभार। नारी विशेषांक बहुत ही अच्छा लगा। समाज की बहनों ने खुलकर अपनी बात कही। मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं। आदरणीय श्री चेतन जी ने महिलाओं को एक मंच दिया और उनको अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला। जितने भी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए उन सभी में एक समानता है और वो है सिर्फ और सिर्फ समाज को संगठित करना, समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करना और नारी शक्ति को समाज के उत्थान के लिए आगे बढ़ने का अवसर देना। एक और बात उभर कर सामने आई है कि हमारे गुरु श्री धनाजी महाराज हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है। अब आप देखये कि समाज की पत्रिका के सिर्फ जो अंक जिन लोगों के पास पहुंचे और उन्होंने पढ़ा होगा तो अज्ञनता तो दूर हुई होगी। मैं ऐसा मानता हूं। अब सवाल यह है कि इस ऊर्जा को बढ़ावा कैसे दिया जाए और समाज के उत्थान के लिए इसका इस्तेमाल कैसे किया जाए ? अपने सभी के लिए यह एक विचारणीय प्रश्न है। आप सभी का हृदय से आभार एवं धन्यवाद।

-हीरालाल स्वामी, राजसमंद

आदरणीय जय श्री ठाकुर जी की श्री धनावंशी हित पत्रिका के मई और जून दोनों अंक पढ़कर दिल में अपार खुशी की अनुभूति हुई। सभी समाज बंधुओं के सारगर्भित आलेख समाज को एक नई दिशा देंगे एवं आपके द्वारा निस्वार्थ भाव से समाज हित के लिए निकाली गई पत्रिका समाज को एक- सूत्र में बांधनने और धनावंश की यश कीर्ति को चारों ओर फैलाने में सहायक सिद्ध होगी। आपका बहुत-बहुत आभार एवं साधुवाद।

-प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

तसल्ली से सोचें

अगर धनावंश एक धर्म पंथ और सम्प्रदाय है तो इसकी यात्रा परम पूजनीय धनाजी महाराज के साथ शुरु होती है। अगर धनाजी के प्रति आपकी श्रद्धा किसी कारण से नहीं है तो आप अपने पंथ को समाप्त ही समझो।

कुछ चीजे कमजोर की हिफ़ाजत में महफूज रहती है, बस विश्वास होना चाहिए,
जैसे मिट्टी के गुल्लक में लोहे के सिक्के।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) * मो.: 9461037562**

धर्म परायण देवमित्र नहीं रहे

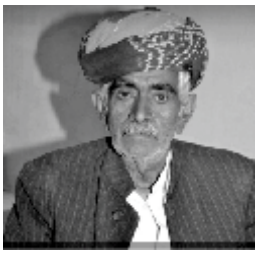

श्रीमान देवमित्रजी स्वामी पुजारी दुजार का स्वर्गवास 5 जुलाई 2020 को हो गया था। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा धनावंशी हित पत्रिका परिवार उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

लक्ष्मीनारायण स्वामी का देवलोकगमन

सेवानिवृत्त पुलिस उप अधीक्षक श्री लक्ष्मी नारायणजी स्वामी जोधपुर निवासी का देहावसान 6 जुलाई 2020 को जोधपुर में हो गया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उनकी पार्थिव शरीर को एम्स जोधपुर को दान कर दिया गया। धनावंशी समाज उनके सामाजिक कार्यों का सदैव ऋणी रहेगा। श्री धनावंशी हित पत्रिका परिवार उनके निधन पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

●●●●●

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

**जिंदगी आसान नहीं होती, इसे आसान बनाना पड़ता है,
कुछ अंदाज से और कुछ नजर अंदाज से।**

BHARTI NIKETAN SCHOOL, श्रीडूंगरगढ़ (BKN)

NEET व IIT के लिए गारण्टी बैच शुरू

बीकानेर जिले का नं. 1 व राजस्थान का टॉप स्कूल

कक्षा 11 वीं में NEET व IIT फाऊण्डेशन के लाईव बैच 1 अगस्त से शुरू ❖ टॉपर्स को टेबलेट फ्री ❖ 2 क्लास टॉपर्स की फीस फ्री कहीं से भी

राजस्थान बोर्ड के इतिहास में पहली बार

12वीं साईंस में हर पांचवा विद्यार्थी 90% से ऊपर

राजस्थान में 1st Merit के साथ

12TH SCIENCE 2020

10 में से 7 राज्य मैरिट

सभी LIVE Classroom

ROLL NO. 2547969 TO 2548161

रिकॉर्ड 6 विद्यार्थी 98% से ऊपर

रिकॉर्ड 39 विद्यार्थी 90% से ऊपर

कुल विद्यार्थी 193

छात्रवृत्ति : 90% से ऊपर, दो क्लास टॉपर्स के लिए फीस फ्री* व टॉपर्स के लिए टेबलेट फ्री*। | लड़के व लड़कियों के लिए अलग-अलग स्कूल व कॉलेज

(विशेष : सभी विद्यार्थियों के 10वीं की तुलना में 12वीं के अंको में 30 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी)

1st STATE MERIT

मैरिट के इच्छुक विद्यार्थी तुरन्त प्रवेश लें (मैरिट फैक्ट्री)

श्यामसुन्दर शर्मा

XII - 99.60%

498/500

(X-90.83%)

INTERACTIVE LIVE ONLINE CLASSES & ADMISSIONS CONTINUED

LIVE CLASS PLAY TO COLLEGE (SCI/COM/ARTS/AG) BSTC, PTET, AIR FORCE, NAVY, ARMY

- LIVE CLASSES
- DOUBT REMOVAL SESSION
- STUDY MATERIAL
- TEST SERIES
- LIVE PTM

6th STATE MERIT	7th STATE MERIT	8th STATE MERIT	9th STATE MERIT	9th STATE MERIT	10th STATE MERIT
मो. साबीर Overall %	खुशी चौधरी Overall %	मधुसूदन Overall %	राकेश Overall %	विनोद तावणियां Overall %	अर्पिता चौधरी Overall %
98.60%	98.40%	98.20%	98.00%	98.00%	97.80%

कोमल सैनी	लोकेश शर्मा	अमन चौधरी	कृष्णा दर्जी	देवांग दर्जी	घनश्याम [illegible]	आशोककुमार	आरती तावणिया	कुमारी आरसी	लालचन्द शर्मा	अभिषेक
97.20%	97.20%	97.00%	96.80%	96.60%	96.00%	95.80%	93.60%	93.60%	93.60%	93.40%
आईना गोदारा	घनश्याम शर्मा	पूजा प्रजापत	मधुसूदन स्वामी	कुमारी सपना	गोपालराम सहू	राकेशनाथ	सन्तोषकुमार	मनोजकुमार	प्रियंका यादव	हर्ष सोनी
93.40%	93.20%	93.20%	93.00%	92.60%	92.40%	92.20%	92.20%	91.80%	91.80%	91.60%
सीता	सुनीता मोहता	आलोक [illegible]	शिवकरण	हेमन्त मोहता	घनश्याम	जयश्री सोनी	प्राची राजपुरोहित	शिल्पा प्रजापत	[illegible]	
91.40%	91.20%	90.80%	90.60%	90.60%	90.40%	90.40%	90.20%	90.00%	90.00%	

STATE MERIT	7
98% Above	6
95% Above	14
90% Above	39
80% Above	116
TOTAL STUDENTS	193

www.bhartiniketan.org | Karni Nagar, Sri Dungargarh | Helpline : 94144-17321, 9413265729 | bhartiniketanschool&College

सभी धन्नावंशी समाज को
जय श्री गुरूदेव धन्ना जी महाराज की ।

धनावंशी स्वामी समाज

को

हार्दिक शुभकामनाएं

GANGA DAS VEISHNAW
B.A (H) M.A., B.ED, LLB

SAMPADA REAL ESTATE
Main DPS Circle, Pal Bye-Pass,
JODHPUR (Raj.)
Mobile : +91 94144 40880

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।